इस्लाम
जिससे मुझे प्यार है

इस्लाम
जिससे मुझे प्यार है

अब्दुल्लाह अडियार
(संपादक : दैनिक निरोत्तम, मद्रास)

अनुवादक
नसीम ग़ाज़ी फ़लाही

मर्कज़ी मक्तबा इस्लामी पब्लिशर्स
नई दिल्ली - 110025

विषय-सूची

कुछ लेखक के बारे में

इस अमर कृति 'इस्लाम, जिससे मुझे प्यार है' के लेखक जनाब अब्दुल्लाह अडियार हैं। उनका जन्म १९३५ में तमिलनाडु के जिला कोइम्बतूर के एक नगर तिरयूर में हुआ। इण्टर तक उन्होंने शिक्षा प्राप्त की। स्कूल और कालेज के जीवन में साहित्यिक कार्यक्रमों में उन्हें काफी दिलचस्पी रही। आप कालेज के तमिल साहित्य विभाग के सचिव भी रहे।

जनाब अडियार साहब ने बहुत से नाटक भी लिखे हैं और एक ज़माने में आपने फिल्मों के लिये वार्तालाप भी लिखे हैं। आपके लेखों (वार्तालापों) को काफ़ी पसन्द किया गया। वे तमिलनाडु के एक प्रबल वक्ता हैं।

जनाब अडियार विनोबा भावे के साथ भूदान आन्दोलन में भी शरीक रहे और उसके कार्यों में हिस्सा लेते रहे। इस आन्दोलन के आरगन 'ग्रामदान' के भी आप सम्पादक रह चुके हैं।

तमिलनाडु के प्रसिद्ध दैनिक समाचार पत्र तनरल और मुरसौली के सम्वाददाता और सह-सम्पादक भी आप रह चुके हैं।

इमर्जेन्सी के दौर में गिरफ्तार होने वालों में आप भी शामिल थे और इस सम्बन्ध में आपको काफ़ी कठिनाइयां और कष्ट उठाने पड़े।

बचपन ही से मुस्लिम विद्यार्थी आपके साथी रहे हैं। आपके शिक्षकों में भी कई एक मुस्लिम थे। मद्रास के पत्रकारिता सम्बन्धी जीवन और राजनीति कार्यों के दौरान भी बहुत से मुस्लिम लोग आपके मित्र और

साथी थे । यही कारण है कि मुसलमानों के धर्म और अक़ीदों के बारे में बहुत कुछ जानकारी आसानी से उन्हें प्राप्त हो गई । इसके बाद आप खुद भी इस्लाम के अध्ययन की ओर आकृष्ट हुए और इस्लाम का अच्छा-खासा अध्ययन किया ।

इमर्जेन्सी के ज़माने में जब मीसा के अन्तर्गत आपकी गिरफ्तारी हुई और आप डेढ़ साल तक नज़रबन्द रहे तो इस्लाम के अध्ययन का एक और अवसर आपको प्राप्त हो गया । इस अवसर से फायदा उठाते हुए आपने इस्लाम का गहरा अध्ययन किया ।

रिहाई के बाद 'इस्लाम, जिससे मुझे प्यार है' के नाम से आपने निरन्तर लेखों का एक सिलसिला अपने अखबार में शुरू किया ।

'सारी दुनिया निकट भविष्य में प्रत्यक्ष रूप से या परोक्ष रूप से इस्लाम को अपना लेगी ।'

यह अडियार साहब का अटल विश्वास है ।

— नसीम ग़ाज़ी फ़लाही

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

बेहतरीन नमूना

इस्लाम धर्म को मैं बहुत ही आदर और सम्मान की दृष्टि से देखता हूँ, इस सिलसिले में मैं अपने विचारों को लिखित रूप में पेश कर रहा हूँ। पाठकगण इनका ध्यानपूर्वक अध्ययन करेंगे, ऐसी मेरी आशा है।

आज आमतौर से धर्म के संस्थापकों को रूढ़िवादी कहा जाता है। लेकिन इन संस्थापकों की जीवनियों का अध्ययन करने के बाद मैं इसी नतीजे पर पहुंचा हूं कि ये सब महान पुरुष अपने-अपने युग के ग़लत रीति-रिवाजों के विरुद्ध आवाज़ उठाने वाले क्रांतिकारी लीडर थे।

हिन्दू धर्म या वैदिक धर्म के सुधार की कोशिश करने वाले शंकराचार्य भी एक क्रांतिकारी व्यक्ति थे। वेद के एक मायने आँखों से ओझल रखने या छिपाने के भी हैं। वेद के इस अर्थ को मानने वाली दुनियां में 'वेद सभी के लिये हैं' का नारा लगाने वाले रामानुजम भी क्रांतिकारी थे।

हज़रत मसीह भी अपने युग के ग़लत रीति-रिवाजों के विरुद्ध आवाज़ उठाने वाले क्रांतिकारी व्यक्ति थे। इस प्रकार अगर हम धर्मों के इतिहास का अध्ययन करें तो हम देखेंगे कि उनके महान पुरुष रूढ़िवादी नहीं, बल्कि क्रांतिकारी ही रहे हैं।

मैं यह बात स्पष्ट रूप से कहने में कोई झिझक महसूस नहीं करता कि इन क्रांतिकारी लोगों में सबसे महान मुहम्मद सल्ल० हैं। हज़रत

मुहम्मद सल्ल० के अतिरिक्त अन्य व्यक्तियों[१] ने ज्ञान और विवेक को किसी न किसी के साथ रहकर प्राप्त किया है। फिर उनकी शिक्षा-दीक्षा में उनके मां-बाप या उनके परिवार का भी योगदान रहा है। लेकिन हम देखते हैं कि प्यारे नबी सल्ल० के हालात इससे बिल्कुल भिन्न हैं। आप सल्ल० के जन्म से पूर्व ही आप सल्ल० के आदरणीय पिता अब्दुल्लाह का देहांत हो गया था। पिता का चेहरा जिन लोगों ने न देखा हो, वे प्यारे नबी सल्ल० की महरूमियों और कठिनाइयों का अनुमान भलीभांति कर सकते हैं।

ये महरूमियां अभी खत्म नहीं हुईं। आप सल्ल० अभी ६ वर्ष ही के थे कि प्यारी मां का साया भी सिर से उठ गया। हुआ यह कि आप सल्ल० अपनी प्यारी मां और उम्मे ऐमन के साथ यसरिब की तरफ, जहां आप सल्ल० के पिता की क़ब्र थी, जा रहे थे कि रास्ते ही में मां चल बसीं। पिता का चेहरा देखने को न मिला, अल्पायु और सफ़र की हालत में माँ की जुदाई का ग़म भी उठाना पड़ा। इस यतीम बच्चे को सहारा देने के लिए दादा अब्दुल मुत्तलिब आगे आये। लेकिन अभी दो साल भी गुज़रने न पाये थे कि वह भी चल बसे।

बाप, फिर मां और दादा के स्नेहों से महरूम! और ये सारी महरूमियां आठ ही वर्ष के अन्दर!! अब प्यारे नबी सल्ल० बिल्कुल अकेले खड़े थे!!!

मानव जगत को अल्लाह की रहमत से मालामाल करने वाले प्यारे नबी बेसहारा अकेले खड़े नज़र आते हैं।

इस परिस्थिति में आपके चचा अबू तालिब ने आप सल्ल० का साथ दिया, लेकिन माँ-बाप से महरूम किसी व्यक्ति की तकलीफों का अन्दाज़ा वही लोग कर सकते हैं जो अपने मां-बाप के साये से ख़ुद भी महरूम रहे हों।

इस तरह विपदाओं में ग्रस्त एक यतीम के हाथ से इस्लाम जैसी बड़ी दौलत दुनिया को मिली। किस तरह इस यतीम का पैग़ाम स्पेन से चीन

---

१. नबियों के अलावा। (अनुवादक)

तक—दुनिया के इस किनारे से उस किनारे तक फैला। यह एक आश्चर्यजनक सत्य है। प्यारे नबी सल्ल० का निर्दोष और हर प्रकार की बुराइयों से पाक जीवन ही इस्लाम के इस बड़े पैमाने पर प्रचार का मूल कारण है। यह बात कहना बिल्कुल उचित है कि मुहम्मद सल्ल० का महान व्यक्तित्व मानवता के लिए बेहतरीन आदर्श है।

मज़दूरी पर चौपायों को चराने वाला बादशाह

प्यारे नबी सल्ल० का जीवन बचपन से लेकर अन्त तक एक बेहतरीन आदर्श है।

कितने ही लीडर और कितने ही धार्मिक नेता ऐसे हैं जिनका प्रारम्भिक जीवन ग़लत रास्तों में भटका हुआ नज़र आता है। लेकिन प्यारे नबी सल्ल० का जीवन होश सम्भालने से लेकर आख़िर तक बिल्कुल पाक साफ़ है। उसमें न कोई धब्बा नज़र आता है, न कोई ऐब।

आप सल्ल० के संरक्षक आपके चचा अबू तालिब थे। अबू तालिब की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी, इसलिए उनके आर्थिक बोझ को कम करने के लिए प्यारे नबी सल्ल० ने मज़दूरी पर पशुओं को चराने का काम भी किया।

□ मेरे हुज़ूर !

□ सारे संसार को सीधा मार्ग दिखाने के लिए अल्लाह की ओर से भेजे हुये रहनुमा!

□ अरबवासियों को ज्ञान, विवेक और सूझबूझ की दौलत से मालामाल करने वाले!

□ रोम की विशाल शक्ति को पराजित करने वाले स्वामी!

□ ज्ञान, कर्म और दुनिया के सारे ही खज़ानों से इस्लाम के अनुयायियों को सम्पन्न कर देने वाले महान नेता!

□ राजाओं के राजा

छोटी उम्र में मजदूरी पर आप स० ने पशु भी चराये। कितनी मुसीबतों और मुश्किलों के आप शिकार हुये इसकी कल्पना ही से हमारी आंखें सजल हो जाती हैं।

इन बेहतरीन ख़ूबियों के मालिक व्यक्ति का नेतृत्व मुसलमानों को प्राप्त है। निस्संदेह मुसलमान रश्क़ के लायक़ और सौभाग्य-शाली हैं।

आप सल्ल० ने बकरियां भी चरायीं। अपने चचा के साथ बारह साल की छोटी उम्र में कारोबार के उद्देश्य से वतन से दूर सफ़र भी किया।

अपने परिवार वालों के माल के साथ-साथ बूढ़ी और असहाय महिलाओं के माल भी ले गये ताकि उनकी भी कुछ आमदनी हो सके। आप सल्ल० असहायों और कमज़ोरों का हर समय ख्याल रखते थे।

'मैं बाज़ार जा रहा हूँ, क्या आपको किसी चीज़ की ज़रूरत है जो मैं ले आऊं?'

यह निवेदन अपने आसपड़ोस के असहायों से स्वयं आगे बढ़कर आप सल्ल० करते थे। जो चीज़ें वे मंगाते उनको लाकर दे देते थे।

इसी तरह बेसहारा और मज़्लूम लोगों की मदद के लिए 'हिल-फ़ुलफ़ज़ूल' नामक समिति बनी तो आप सल्ल० ने भी उसमें हिस्सा लिया और उसमें भरपूर सहयोग किया।

आप सल्ल० की जिंदगी सच्चाई का नमूना है। आप सल्ल० ने कभी वायदा ख़िलाफ़ी नहीं की—

एक बार की बात है कि एक साहब यह कह कर चले गये कि 'आप यहीं ठहरें, मैं अभी आता हूं।' प्यारे नबी सल्ल० उसी जगह रहे। एक दिन नहीं, दो दिन नहीं, तीन दिन प्यारे नबी वहीं रहे।

जो साहब आप से यह कहकर गये थे उनके दिमाग़ से यह बात निकल गई कि वह प्यारे नबी सल्ल० को वहां रोक कर आए हैं। तीसरे दिन संयोग से उधर से उनका गुज़र हुआ तो प्यारे नबी सल्ल० को वहां

मौजूद पाया। शर्मिन्दगी से उन्होंने पूछा, 'क्या आप यहीं ठहरे हुए हैं?' अल्लाह के रसूल सल्ल० ने किसी नाराज़ी के बग़ैर बड़ी ही नरमी के साथ कहा, 'आप ही ने तो मुझे यहां ठहरे रहने को कहा था।'

ऐसी ही महान ख़ूबियों के कारण आप सल्ल० को 'अमीन' (अमानतदार) और 'सादिक़' (सच्चा) के नामों से लोग पुकारा करते थे।

ऐसे उच्च गुणों से सुसज्जित मनुष्य को हज़रत ख़दीजा रज़ि० ने अपने जीवन साथी के तौर पर चुना। यह वास्तव में हज़रत ख़दीजा रज़ि० का सौभाग्य था।

इससे पहले हज़रत ख़दीजा रज़ि० दो बार विधवा हो चुकी थीं। वे प्यारे नबी सल्ल० से उम्र में पन्द्रह साल बड़ी थीं। 'ताहिरा' (पाकदामन) उनका लक़ब था।

हज़रत ख़दीजा रज़ि० से क़ासिम, अब्दुल्लाह (ताहिर) ज़ैनब, रुक़य्या, उम्मे कुलसूम, फ़ातिमा-आप सल्ल० के कई बच्चे पैदा हुए। क़ासिम और अब्दुल्लाह अल्पायु ही में चल बसे। हज़रत ख़दीजा से विवाह के बाद प्यारे नबी सल्ल० को कुछ आर्थिक निश्चिन्तता प्राप्त हुई तो प्यारे नबी एकाग्रचित्त होकर मानवता के सुधार के बारे में सोचने लगे।

पारिवारिक कर्तव्य का निर्वाह करते हुये दीन की तरफ़ बुलाना और दीन को ग़ालिब करने की ज़िम्मेदारियां पूरी करना हमें इस महान नबी ही की ज़िंदगी में नज़र आता है।

गौतम बुद्ध सन्यास ग्रहण किये हुये थे,

शंकराचार्य ने शादी नहीं की थी,

हज़रत मसीह अविवाहित थे,

बहुत से धर्मों के गुरु ब्रह्मचारी अविवाहित और सन्यासी ही नज़र आते हैं।

लेकिन प्यारे नबी सल्ल० अपनी घरेलू ज़िम्मेदारियों को भी पूरा करते हुए नज़र आते हैं और दीन की स्थापना के सारे बोझों को भी अपने कन्धों पर उठाये हुये हैं। सिर्फ एक ही धर्म पत्नी नहीं, कई पत्नियों की ज़िम्मेदारियों का बोझ भी आप पर है। इतनी सारी ज़िम्मेदारियों के

बावजूद आप सल्ल० का घरेलू जीवन भी एक आदर्श जीवन है और आप सल्ल० का सामाजिक जीवन भी!

लोगों ने आपको 'अल-अमीन' (अमानतदार) और 'अस्सादिक़' (सच्चा) कहा, लेकिन जब आप सल्ल० ने दीन की ओर बुलाया तो यही लोग आपके कठोर विरोधी बन गए!

धर्मों के इतिहास में कितने ही क्रांतिकारियों ने लोगों को आमंत्रित किया, लेकिन किसी का इतना घोर विरोध नहीं किया गया, जितना आप सल्ल० का! आप स० के संदेश में आखिर क्या बात थी कि आप सल्ल० का इतना घोर विरोध किया गया?

निराकार की उपासना

दुनिया के किसी क्रांतिकारी ने वह बात नहीं कही जो बात नबी० स० ने कही है। इबादत के लिए प्रतिमा, मूर्ति, चित्र, कोई भी चीज़ नहीं होनी चाहिए। यह शिक्षा प्यारे नबी स० ने चौदह सौ वर्ष पूर्व दी। प्रतिमायें और तस्वीरें नहीं होनी चाहिएं– यह कहा तो जा सकता है लेकिन इससे एक क़दम आगे बढ़कर आप स० ने बुतों को तोड़ा और तस्वीरों को मिटाया। आप स० ने केवल उपदेश ही नहीं दिया बल्कि उस पर अमल करके दिखाया।

यहां तमिलनाडु में हम ई. वी. आर. को एक महान क्रान्तिकारी व्यक्ति मानते हैं। इसलिए कि उन्होंने मूर्ति पूजा की निंदा ही नहीं की बल्कि व्यवहारतः मूर्तियों को तोड़ा भी। लेकिन प्यारे नबी सल्ल० ने शताब्दियों पहले यह कारनामा अंजाम दिया। क़ुरआन पाक की आयत, 'सच आ गया, असत्य मिट गया। असत्य मिटने ही के लिए होता है।' को पढ़ते हुए काबा में रखे हुए बुतों को प्यारे नबी ने हटा दिया।

मुसलमानों की सबसे बड़ी ईद ''ईदुल अज़हा'' है। यह ईद किसकी

याद में मनायी जाती है और उसने क्या किया था?—हज़रत इब्राहीम अपने आज्ञाकारी सुपुत्र इस्माईल की अल्लाह की राह में बलि देने के लिए आगे बढ़े। इसी याद में यह ईद मनाई जाती है।

हाँ! इन बुज़ुर्गों की तस्वीरें भी काबा में रखी हुई थीं।

ईद मनाने का तो हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने आदेश दिया और इस तरह इन बुज़ुर्गों की प्रतिष्ठा को सदैव के लिये जीवित कर दिया, लेकिन बुतों के साथ-साथ उनकी तस्वीरों को भी आप सल्ल० ने काबे से हटा दिया। क्या इससे भी बढ़कर किसी क्रांतिकारी कार्य की कल्पना की जा सकती है?

फिर यह अहम कार्यवाही किस देश में की गई? उस देश में की गई जहां अज्ञान और मूर्तिपूजा लोगों की नस-नाड़ियों में दौड़ रही थी।

रूस में कम्युनिज़्म का शासन है, ईश्वर का इंकार है, लेकिन वहां देवी देवताओं के बुतों को मिटाने या हटाने का किसी में साहस नहीं।

यहां तमिलनाडु में कुछ क्रान्तिकारी कवियों ने यह गीत गाया कि वह सुबह कब आयेगी जबकि यहां के बुतों को तोड़ दिया जायेगा, लेकिन यहां की गली-गली, मोहल्ले-मोहल्ले में हम आज भी बुतों को मौजूद पाते हैं।

मगर चौदह सौ साल पहले बुतों को काबा से हटाया गया। यह मानव-इतिहास में बहुत ही साहसपूर्ण और क्रान्तिकारी क़दम था।

अपने ही देश में अपने ही बाप-दादा के पूजे हुए बुतों को हटाना और मिटाना असाधारण साहस का काम है और ऐसा क्रान्तिकारी कारनामा मानव-इतिहास में नबी सल्ल० ही के हाथों अंजाम पाया है। आज मनुष्य प्रगतिवादिता के बड़े-बड़े दावे करता है। ईश्वर के इंकार को, नास्तिकता को अपनी प्रगतिवादिता के सुबूत में पेश करता है। लेकिन वह बुतों और तस्वीरों की मुहब्बत में आज भी गिरफ्तार है।

यह कैसी विडम्बना है कि ये प्रगति वादी लोग ईश्वर का तो इंकार करते हैं और आगे बढ़े तो देवी-देवताओं के बुतों को भी व्यर्थ कह देते हैं लेकिन वे स्वयं अपने नेताओं की प्रतिमाएं बनाते और उनके आगे सिर झुकाते हैं।

वे देवताओं की तस्वीरों को हटाते हैं लेकिन उसके स्थान पर अपनी तस्वीरें लगा लेते हैं। प्रतिमाएं हों या चित्र-दोनों ही मनुष्य की कमज़ोरी का प्रतीक हैं। इस कमज़ोरी से सावधान करने वाले और इससे मनुष्य को बचाने वाले प्यारे नबी सल्ल० हैं और उन्होंने यह महान कार्य चौदह सौ साल पहले करके दिखा दिया।

आज प्रतिमाओं और मूर्तियों और तस्वीरों का सहारा लिये बग़ैर केवल ज्ञान और धारणाओं के आधार पर अगर जीवन का कोई आन्दोलन चल रहा है तो वह इस्लामी आन्दोलन है।

कुछ लोग कहते हैं कि अगर प्रतिमा और तस्वीरें बनाना बन्द कर दिया जाए तो सुन्दरता के प्रति मानव की अभिरुचि समाप्त हो जाएगी। लेकिन इन चीज़ों से मुक्त और पाक मुसलमानों ने दुनिया को सुन्दर से सुन्दर इमारतों का तोहफ़ा दिया है।

कल्पना को तस्वीर और प्रतिमा की क़ैद से मुक्ति दिलाने के बाद मुसलमानों ने जो कारनामे अंजाम दिये उसका विवरण यह है—

(१) गणित शास्त्र में मौजूदा अंकों की संरचना की गई।

(२) बीज गणित वजूद में आया और उसका विकास भी हुआ।

(३) निर्माण कला में सुन्दर से सुन्दर इमारतों और मस्जिदों का निर्माण हुआ।

(४) रसायन शास्त्र में सिल्वर नाइट्रेट और सल्फ्यूरिक एसिड की खोज हुई।

चिकित्सा शास्त्र में—

(५) अ : अल-फ़ाराबी की किताब शल्य चिकित्सा,
ब : इब्ने सीना की अल-क़ानून,
स : अली इब्ने अब्बासी की "किताबुल मालिकी" जैसी मौलिक पुस्तकें लिखी गयीं।

(६) काव्य में—

मुतनब्बी से लेकर इक़बाल तक सुन्दर और अछूते काव्य का एक समुन्द्र लहरें ले रहा है।

साहित्य में—

अलिफ़ लैला, लैला मजनू जैसे खज़ाने मानव-जाति को मिले।

कोई पूछ सकता है कि क्या दूसरी क़ौमों ने गर्व करने योग्य ऐसे कार्य नहीं किए है? उत्तर में यही कहना पड़ता है कि "इतने अधिक नहीं।"

फिर एक और विशेष गुण यह है कि इन शिक्षाओं को लेकर उठने वाली क़ौम ऐसे मरुस्थल से निकली जहां तपती हुई धूप थी और प्रकृति के सुन्दर दृश्यों का अभाव था। इसके बावजूद यह क़ौम सौन्दर्य का इतना स्वाद और सुरुचि दुनिया को दे गयी।

हां! एक उम्मी (निरक्षर) की शिक्षा ने यह सब किया और मानव-संसार को बुलन्दियों तक पहुंचा दिया।

मैं इस्लाम से क्यों प्यार करता हूँ—इसके कुछ कारण आगे उल्लिखित हैं।

इस्लाम : जिससे मुझे प्यार है

चमत्कारों के बिना

चमत्कारों के बिना सबसे बड़ा चमत्कार दिखाने वाले नबी! धार्मिक गुरुओं पर आम लोग आसानी से विश्वास नहीं करते। बहुत सारे गुरु आश्चर्यजनक और अस्वाभाविक चीज़ों का प्रदर्शन करते हैं और उनके चमत्कारों को देखकर आम इन्सानों की चमत्कार प्रिय अभिरुचि उन पर विश्वास करने लगती है।

ईश्वर पर ईमान भी बहुत से धर्मों में इसी चमत्कार प्रियता पर निर्भर करता है— हक़ीक़त यह है कि जब तक इंसान इस बात को न माने कि नेक मनुष्य को शाश्वत जीवन और बुरे मनुष्यों को शाश्वत असफलता मिलकर रहेगी तब तक सम्भव नहीं कि मनुष्य नेकी और

पाकीज़गी की ज़िन्दगी अपनाने के लिए दृढ़ता और मज़बूती के साथ आगे बढ़ सके ।

इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए और इन बातों को मन और मस्तिष्क में बिठाने के लिए हमें पुराणों में, वेदों में, प्राचीन नियमों की पुस्तक और नवीन नियमों की पुस्तक में धर्म की ओर बुलाने वाले भांति-भांति से अलौकिक तरीके अपनाते हुए दिखाई देते हैं ।

ऐसे चमत्कारों से हटकर पवित्र और गहरा जीवन अगर किसी का नज़र आता है तो वह प्यारे नबी सल्ल० का जीवन है ।

इतना ही नहीं, बल्कि जब चमत्कारों का मुतालबा आप स० से किया गया तो इसके जवाब में आप स० ने क़ुरआन मजीद को पेश कर दिया ।

मूर्तिमान चमत्कारों से मुक्त होकर ज्ञान और विवेक की ओर बुलाने वाला क्रांतिकारी व्यक्तित्व प्यारे नबी सल्ल० का है ।

एक और पहलू से प्यारे नबी सल्ल० के जीवन को देखिए । आप सल्ल० धार्मिक गुरु हैं और साथ ही जिहाद का नेतृत्व भी आप सल्ल० ने किया है ।

उपदेश करने वाले उपदेशक भी हैं और एक कुशल शासक और रहनुमा भी इन दोनों हैसियतों का आप सल्ल० के व्यक्तित्व में बड़ा सुन्दर समन्वय पाया जाता है ।

बद्र का युद्ध क्षेत्र हो या बनी कैनका का घेराव हो, सवीक़ की लड़ाई हो या उहुद का युद्ध-तबूक की मुहिम हो या ख़ैबर का संघर्ष हर जगह और हर रण-क्षेत्र में आप सल्ल० एक समझदार और बहादुर जनरल के रूप मे सामने आते हैं ।

धार्मिक गुरु और साथ ही फौज के अध्यक्ष! यह दोनों ख़ूबियां एक साथ अगर पाई जाती हैं तो आप सल्ल० ही की ज़िंदगी में!

जिहाद और सैन्य कला में आप सल्ल० माहिर नज़र आते हैं आप सल्ल० ने ईमान और अक़ीदों के बल पर जो साहस अपने साथियों में पैदा किया वह इतिहास का एक शानदार कारनामा है ।

आप सल्ल० ने लड़ाई न तो देशों को विजय करने की लालसा में की और न दुश्मनों को नीचा दिखाने की भावना से। केवल हक़ की सरबुलंदी आप स० के सामने थी और इसलिए इसको जिहाद कहा गया और इस जिहाद में अपने प्राणों की बाज़ी लगाने वाले बहादुरों का नाम शहीद रखा गया। शहीद के मायने होते हैं, अपनी जान कुरबान करके हक़ की गवाही देने वाले।

लड़ाई के मैदान में घबराकर और तीरों की बौछार से डरकर भाग निकलने वाला जहन्नमी है।

यह थी प्यारे नबी सल्ल० की महान शिक्षा जिहाद के बारे में। इसका परिणाम यह हुआ कि आप सल्ल० के साथी निर्भय होकर पूरे साहस के साथ सत्य के संदेश को लेकर स्पेन से चीन तक फैल गए।

प्यारे नबी सल्ल० के बताए हुए तरीक़े से जब मुसलमान दूर हुए तो उसी समय से उनका पतन शुरू हो गया। इससे पहले उन्होंने कभी पराजय का मुँह नहीं देखा था।

आप स० के ज़माने में रोम की हुकूमत एक विशाल शक्ति समझी जाती थी लेकिन प्यारे नबी स० की बहादुरी और दृढ़ विश्वास के सामने रोम की यह शक्ति ठहर न सकी। जी हां, यही वह मुहम्मद सल्ल० हैं जो मरुस्थल में पैदा होकर पलने-बढ़ने वाले एक निर्धन व्यक्ति थे और फिर मानवता के लिए महान नेता साबित हुए।

सैनिक सामग्री में आप सल्ल० को चमड़े की लगाम तक उपलब्ध न थी। मजबूरन कपड़ों से बनी हुई लगामें सैनिक घोड़ों को लगाई जा रही थीं।

एक तरफ़ सैनिक सामग्री का यह अभाव! दूसरी तरफ़ विशाल रोमन इम्पायर, हर प्रकार की सैनिक साज-सज्जा से माला माल! क्या मुक़ाबला था दोनों का?

लेकिन अपने सिद्धान्तों पर विश्वास रखने वाले नबी और उन के अनुयायियों ने अल्लाह पर **भरोसा** करके मुक़ाबला किया और सफल हुए। एक तरफ़ आप स० दुनिया को त्याग देने वाले सन्यासियों से भी ज़्यादा निःस्वार्थ और सरल स्वभाव थे, दसरी तरफ़ अरब और उसके

आसपास के कामियाब शासक । इसके बावजूद आप स० की ज़िंदगी बड़ी सादा थी । आप मामूली मकान में रहते थे । आप स० का जीवन स्तर वह न था जो रईसों और अमीरों की ज़िंदगी का हुआ करता है । आप स० का भोजन अत्यन्त साधारण होता था । यहां तक कि आप स० को फ़ाक़े तक की नौबत आ जाती थी, जिसे याद करके हमारी आंखें सजल हो जाती हैं ।

ये सारी ख़ूबियां वास्तव में देन हैं इस्लाम की, जिसके आप स० सच्चे प्रतिनिधि और अलमबरदार थे ।

इसीलिए इस्लाम से मुझे प्यार है ।

क्या हज़रत मसीह ईश्वर के पुत्र हैं?

हम पहले बयान कर चुके हैं कि प्यारे नबी सल्ल० ने मूर्तियों को तोड़ने और चित्रों को हटाने का एक महान क्रान्तिकारी कार्य किया । इसके अतिरिक्त मानव इतिहास का एक और महान क्रान्तिकारी कार्य आप सल्ल० के हाथों सम्पन्न हुआ, जिसे समझने की आवश्यकता है ।

बाप, बेटा, पवित्र आत्मा का त्रीश्वरवाद ईसाइयों के बुनियादी अक़ीदों में से है ।

पापियों को मुक्ति दिलाने और मानव पापों की सज़ा स्वयं भुगतने के लिए सूली पर चढ़कर हज़रत मसीह अलैहि० ने जान दी । फिर तीसरे दिन जीवित होकर बाप के बायीं ओर सिंहासन पर विराजमान हुए । यह है इसाईयों की धारणा ।

१. हज़रत मसीह अलैहि० ईश्वर के पुत्र हैं ।
२. वे मरने के बाद ज़िन्दा हो उठे ।

उपरोक्त इन दो बातों को न मानने वाले लोग ईसाई नहीं हो सकते ।

यह दोनों अक़ीदे ईसाई जगत पर छाये हुए थे कि प्यारे नबी सल्ल०

रसूल बनाकर भेजे गये। आप सल्ल० ने घोषित किया कि ये दोनों अक़ीदे असत्य हैं। आप सल्ल० ने बताया:

□ हज़रत मसीह अलैहि० ईश्वर के पुत्र नहीं, ईश्वर के नबी थे।

□ उन्हें सूली नहीं दी गई।

असल बात यह है कि उन्हें गिरफ्तार करने के लिए जब एक गिरोह उनके कमरे में घुसा तो उन्हीं में का एक व्यक्ति उनकी शक्ल का नज़र आने लगा। इसी हमशक्ल इन्सान को सूली पर चढ़ाया गया। क़ुरआन में फ़रमाया गया है:

'वास्तव में उन्होंने न उसको कत्ल किया न सूली पर चढ़ाया, बल्कि मामला उनके लिए संदिग्ध हो गया। (४: १५७)

बाइबिल में जिन नबियों का वर्णन मिलता है उन सभी नबियों का वर्णन क़ुरआन में भी हुआ है। जैसे--हज़रत आदम अलैहि०, इब्राहीम अलैहि०, इसहाक़ अलैहि०, इस्माईल अलैहि०, याकूब अलैहि०, यूसुफ़ अलैहि०, मूसा अलैहि०, हारून अलैहि०, दाउद अलैहि०, सुलेमान अलैहि०, यूनुस अलैहि०, इलयास अलैहि०, ज़करिया अलैहि० आदि-आदि। इन्हीं नबियों के साथ क़ुरआन में हज़रत ईसा अलै० का नाम भी लिया गया हैऔर साफ तौर पर स्पष्ट कर दिया गया है कि हज़रत ईसा अलैहि० एक नबी थे, उनमें ईश्वरत्व का कोई चिन्ह तक न था। ईसाइयों और मुसलमानों में क्या मतभेद है, यह मामला यहां विचाराधीन नहीं है। मैं जिस दृष्टि से मामले को देख रहा हूँ वह यह है कि जिस धर्म का उस समय बोलबाला था, जो उस समय एक महान शक्ति के रूप में दुनिया में मौजूद था, उस की ग़लत धारणा के विरुद्ध प्यारे नबी सल्ल० ने किसी लाग-लपेट के बिना आवाज़ उठाई लेकिन इस प्रयास में हज़रत मसीह अलैहि० के सम्मान या आदर में कोई कमी न आने दी।

हज़रत ईसा अलै० के हाथ पवित्र-आत्मा के द्वारा मज़बूत किये गए थे। उनके द्वारा आपको इन्जील प्रदान की गई। इन दोनों वास्तविकताओं को 'अल-किताब' (क़ुरआन मजीद) ने बहुत ही स्पष्ट शब्दों में पूरे गर्व और आदर के साथ बयान किया है। बिल्कुल इसी तरह अन्य धर्मों की ग़लत बातों का तो क़ुरआन खंडन करता है लेकिन उनके महापुरुषों का

आदर करने की शिक्षा देता है ।

□ ग़लत बातों का खण्डन

□ व्यक्तियों का आदर ।

इन दोनों बातों को इस्लाम ने गडमड नहीं किया है, बल्कि स्पष्टतः इन दोनों मामलों में सतर्क रहने और इन्साफ़ से काम लेने की शिक्षा दी है ।

इमरजेंसी के ज़माने में मीसा के अन्तर्गत मुझे भी जेल में डाल दिया गया था । उस समय मुझे दुनिया के विभिन्न धर्मों के ग्रंथों का अध्ययन करने का अवसर मिला ।

मेरे रिश्तेदारों ने, दोस्तों और मित्रों ने और कुछ मुस्लिम साथियों ने इन पवित्र ग्रंथों को मुझ तक पहुंचाया

इन सभी ग्रंथों के अध्ययन करने पर जिस किताब से मैं बहुत ज़्यादा प्रभावित हुआ और जो मुझे अपनी दृष्टि में सबसे ज़्यादा जंची, वह पवित्र क़ुरआन है ।

दिव्य क़ुरआन के विशेष गुण

धार्मिक पुस्तकें विभिन्न प्रकार की पाई जाती हैं । उनमें हर एक की अपनी विशेषतायें हैं ।

हिन्दू धर्म की सबसे पवित्र किताबें वेद हैं । वेद वास्तव में मुनियों और ऋषियों के ईश्वर की शान में गाए हुए गीतों का संकलन है ।

ईसाइयों की इन्जीलें और यहूदियों की तौरात के विभिन्न खण्ड वास्तव में इन्सानों के हाथों लिखा हुआ नबियों का इतिहास और जीवनी है ।

इसी तरह जितनी धार्मिक पुस्तकें मिलती हैं, वे या तो कुछ बुज़ुर्ग

बिभूतियों के रचित गीत हैं जो ईश्वर की शान में गाए गए हैं या फिर वे किताबें नबियों या महापुरुषों के जीवन वतांत पर आधारित हैं और उन्हें कुछ लेखकों ने लिखा है ।

इसके विपरीत कुरआन की प्रमुख विशेषता यह है कि यह प्यारे नबी स० की अपनी लिखी हुई किताब नहीं है और न यह इंसानों के गाए हुए भक्ति-गीतों का कोई संकलन है । इसकी हैसियत केवल इतिहास की हो, ऐसा भी नहीं है, बल्कि:

□ अल्लाह ने लौहे महफ़ूज़ (सुरक्षित पट्टिका) में जो आदर योग्य पुस्तक सुरक्षित रखी है वही दिव्य कुरआन है ।

□ सुरक्षित पट्टिका की उस किताब से परम आदरणीय फ़रिश्ते हज़रत जिबरील अलै० ने इसको समय-समय पर प्यारे नबी स० तक अल्लाह की ओर से पंहुचाया है ।

यही मुसलमानों की धारणा है । कुरआन लिखी हुई किताब नहीं है बल्कि अवतरित किताब है । मुसलमानों का इस पर दृढ़ विश्वास है ।

इस किताब के बहुत से प्रमुख गुण हैं । इसके शब्दों की लयबद्धता से मैं आनन्दित हुआ हूँ । क्या आवाज़ को किसी प्रकार की पावनता प्राप्त है? मैं कहूंगा कि हां है । आवाज़ ही दुनिया की बुनियाद है ।

वेद कहता है कि 'ओम' की आवाज़ से दुनिया की रचना हुई।

बाइबिल का कहना है कि सबसे पहले ईश्वर का बोल था फिर यह दुनिया हुई ।

कुरआन की आवाज़ जहां एक बेहतरीन गद्य की आवाज़ है, वहीं वह अपने अन्दर एक बेहतरीन काव्य का स्वर लिये हुए है । एक अति सुन्दर दृश्य का सौंदर्य भी उसमें पाया जाता है । गद्य, पद्य और छन्द से अनुगुंजित ब्राह्माण्ड का सौंदर्य, इन्हीं चीज़ों का संकलन है कुरआन की आवाज़ ।

'क्या यह वाणी इतनी सुन्दर है कि इस जैसी दूसरी वाणी सम्भव नहीं?'

यह प्रश्न आज भी किया जा सकता है और उस समय भी उठाया

गया था जबकि कुरआन अवतरित हो रहा था । क़ुरआन ने इस सवाल का जवाब उसी समय दे दिया था कि अगर हो सके तो इस जैसी वाणी ले आओ ।

इस चुनौती का जवाब देने से दुनिया आज भी मजबूर है । इसका जवाब देने की कोशिश जिसने भी की, उसे मुंह की खानी पड़ी । कुरआन कहता है:

'हे नबी! हमने तुम्हें कौसर प्रदान कर दिया, तो तुम अपने रब ही के लिये नमाज़ पढ़ो और कुर्बानी करो । तुम्हारा दुश्मन ही जड़ कटा है ।' (१-३ : १०८)

इस तरह सौंदर्य और ज्ञान से परिपूर्ण इस किताब की आयतें हैं । इनका मुक़ाबला करने की कुशल अरबी कवियों ने उसी समय कोशिश की थी और अपनी खुली हार को इन शब्दों में स्वीकार किया था:

'मा हाज़ा क़ौलुल बशर ।' 'यह इन्सान की वाणी नहीं हो सकती ।'

कुरआन ने चुनौती दी, 'कह दो कि अगर इन्सान और जिन्न सबके सब मिलकर कुरआन जैसी कोई चीज़ लाने की कोशिश करें तो न ला सकेंगे । चाहे वे सब एक-दूसरे के साथ सहयोग ही क्यों न करें । (८८:१७)

क़ुरआन मजीद ही में उसके निम्नलिखित नाम हमको मिलते हैं । यह सब नाम महत्वपूर्ण हैं और बड़ी हक़ीक़तों का पता देते हैं:

१. अल-किताब—किताब
२. हब्लुल्लाह—अल्लाह की रस्सी
३. अल-ब्यान—स्पष्ट
४. अल-बुरहान—स्पष्ट प्रमाण
५. अल-मुहैमिन—हिफ़ाज़त करने वाली
६. अल-मुबारक—बरकत वाली
७. अल-मुसद्दिक़—पुष्टि करने वाली
८. अज़्ज़िकरा—नसीहत, याद दिहानी
९. अन्नूर—रोशनी
१०. अल-बसाइर—आंतरिक रोशनियां

११. अल-हुदा—सीधा मार्ग
१२. अर्रहमः—रहमत
१३. अश्शफ़ा—उपचार
१४. अल-मोअ्ज़ः—नसीहत करने वाली
१५. अल-हकम—फ़ैसला करने वाली
१६. अल-मुबीन—साफ़-साफ़ बयान करने वाली
१७. अल-अरबी—अरबी ज़ुबान में
१८. अल-हिकमत—सर्वथा तत्वदर्शिता एवं ज्ञान
१९. अल-हक्क़—सत्य
२०. अल-क़य्यिम—मज़बूत
२१. अल-फ़ुरक़ान—(सत्य-असत्य में) फ़र्क करने वाली
२२. अत्तन्ज़ील—उतरने वाली, (उतारी हुई)
२३. अल-हकीम—हिकमत वाली
२४. अज़्ज़िक्र—याद दिलाना
२५. अल-बशीर—ख़ुशख़बरी देने वाली
२६. अन्नज़ीर—डराने वाली
२७. अल-अज़ीज़—ताक़त वाली
२८. अर्रूह—रूह, स्प्रिट
२९. अल-मजीद—इज़्ज़त व बुज़ुर्गी वाली
३०. अल-करीम—बुज़ुर्ग
३१. अल मुकर्रमः—आदर करने वाली
३२. अल-अजीब—अद्‌भुत
३३. अल-मरफ़ूआ—उच्च
३४. अल-मुतह्हरः—पवित्र, पाकसाफ़
३५. अन्नेमः—नेमत

क़ुरआन के मायने हैं पढ़ी जाने वाली। जी हां! यही किताब पढ़ी जाने वाली किताब है। दुनिया में सबसे ज़्यादा पढ़ी जाने वाली किताब।

उम्मी नबी[1]

अल्लाह की उतारी हुई किताब क़ुरआन को सबसे पहले पढ़ने वाला महापुरुष 'उम्मी' था अर्थात वह पढ़ा-लिखा न था।

'उम्मी' के मायने ना-समझ और बे-अक़्ल के नहीं हैं। बल्कि उन लोगों को 'उम्मी' कहा जाता है जो लिखना-पढ़ना तो न जानते हों लेकिन फिर भी उनकी स्मरण शक्ति तेज़ हो सकती है। उनके पास पहले से ईश्वरीय आदेशों का कोई ज्ञान नहीं होता।

तमिल साहित्य में ये बातें मशहूर हैं कि शेअर (छन्द) को एक बार सुनकर दोहराने वालों की, दोबार सुन कर दोहराने वालों की, तीन बार सुनकर दोहराने वालों की, चार बार सुनकर दोहराने वालों की, इन सब की क्रमानुसार प्रशंसा की जाती है। लेकिन अरब में सैकड़ों शेअरों (छन्दों) को केवल स्मरण से फ़र-फ़र सुनाने वाले 'उम्मी' थे।

काव्य में ही नहीं बल्कि गणित विज्ञान में भी कुछ लोग इतने अधिक स्मरण शक्ति वाले मिलते हैं कि अक्ल हैरान हो जाती है। २१४ को ३१४ से गुणा कीजिए तो पढ़े-लिखे लोग काफ़ी समय के बाद इस का हल निकालते हैं, मगर कुछ ऐसी तेज़ स्मरण शक्ति वाले भी होते हैं जो पढ़े-लिखे न होने के बावजूद इस का हल अपने दिमाग़ से तुरन्त निकाल लेते हैं। इसी तरह वंशावलि वगैरह के सिलसिले में भी कई नस्लों तक की वंशावलि फ़र-फ़र सुनाने वाले उस समय अरबों में मौजूद थे जो पढ़े-लिखे नहीं थे।

---

१. अर्थात जो लिखने पढ़ने से अनभिज्ञ थे और जिनके यहां पिछली आसमानी किताबों का कोई ज्ञान न पाया जाता था।

'उम्मी' के मायने नासमझ के नहीं हैं। अगर उम्मी के मायने नासमझ के लिये जायेंगे तो फिर प्यारे नबी सल्ल० के व्यापार और आप सल्ल० की सूझ-बूझ की बहुत सारी घटनाओं का कोई कारण नहीं बताया जा सकता। आप सल्ल० पढ़े-लिखे न थे परन्तु आप की स्मरण-शक्ति बहुत तेज़ थी और आप उच्च मनोवृत्ति के मालिक थे।

आप को यह विशेषता प्राप्त थी फिर ईश्वर की और अधिक कृपा हुई कि जब वह्य आप पर उतरी तो आपने साफ़-साफ़ वह्य के शब्दों को ज्यों का त्यों लोगों के सामने दोहरा दिया और उनका इमला कराया।

प्यारे नबी सल्ल० को अल्लाह की मदद हासिल थी और आप सल्ल० के सहाबा रज़ि० पर भी अल्लाह की ख़ास मेहरबानी थी। आप सल्ल० की मुबारक जुबान से वह्य के शब्दों को सहाबा रज़ि० ने सुना और फिर उन को ज़ुबानी याद कर लिया। पूरे क़ुरआन मजीद के हाफ़िज़ों को आज भी जब हम कुरआन का पाठ करते हुए देखते हैं तो उनकी योग्यता पर भी रश्क आता है और कुरआन मजीद के अद्भुत चमत्कार पर भी आश्चर्य होता है। हां! एक 'उम्मी' ही ने यह महान कार्य किया और इन बड़ी योग्यताओं को उभारा।

अरबों को आमतौर से कम-समझ, जाहिल, गुमराह, ख़ून ख़राबे के रसिया, बुद्धिहीन और बद-सलीक़ा कहा जाता है। ये सारी बातें बिल्कुल निराधार हैं। हज़ारों साल पहले दुनिया के अन्य स्थानों में बसने वाले इंसानों में जो ख़ूबियां और जो कमज़ोरियां थीं, वही ख़ूबियां वही कमज़ोरियां अरबों में भी पायी जाती थीं। लेकिन अरबों की एक विशेषता यह थी कि वे ज़्यादा पढे-लिखे न थे किन्तु उनकी स्मरण शक्ति आश्चर्यजनक थी। अन्य देशों के लोग स्मरण-शक्ति में उन से बहुत पीछे थे। केवल अशिक्षित होना अज्ञान और बर्बरता का कारण नहीं होता।

अरबों से भी बढ़कर बर्बरता का प्रदर्शन कितने ही देशों में हुआ है।

क़िलों में इंसानों के सिर काट कर लटकाए गए।

ज़िंदा इंसानों को रखकर दीवार को चुन दिया गया।

हाथियों के पांव तले उन्हें रौंदा गया।

सूलियों पर चढ़ाकर कीलों से जड़ा गया। ज़िन्दा दफ़न किया गया। चूने में धंसाया गया। भूखे शेरों के सामने शिकार की तरह फेंका गया। रोम से लेकर तमिलनाडु तक बर्बरता के ये प्रदर्शन हुये जैसा कि इतिहास के पृष्ठ इसके गवाह हैं। क्या अरबों की बर्बरता और अज्ञान इससे बढ़कर था? अतः यह एक निराधार आरोप है जो अरबों पर लगाया जाता है। कहा जाता है कि प्यारे नबी सल्ल० की दावत का अरबों ने विरोध किया। आप सल्ल० को सताया लेकिन मदीनावासी भी अरब ही थे, जिन्होंने प्यारे नबी का साथ दिया और इसका हक़ अदा किया। आप सल्ल० पर जानें निछावर कीं। आप सल्ल० के नेतृत्व में विभिन्न रण क्षेत्रों में अपनी जानों को खतरें में डालकर जंगें कीं।

काबा में रखी हुई मूर्तियों को हटाना और उनकी पूजा को असत्य बतलाने का क्रान्तिकारी काम भी प्यारे नबी सल्ल० के नेतृत्व में अरबों ही के हाथों हुआ।

यह महान क्रांति चौदह सौ साल पहले अगर हिन्दुस्तान में, चीन में या किसी और देश में लायी जाती तो क्या वहां की जनता इस सिलसिले में इसी वफ़ादारी का सबूत देती जिस वफ़ादारी का सबूत अरबों ने दिया है?

इस पहलू से जब हम अरबों को देखते हैं तो उनकी महानता हम पर स्पष्ट हो जाती है। अरब की धरती रेगिस्तान है। हां इसी रेगिस्तान में यह महान क्रांति आई। इस हैसियत से मैं उस देश को और वहां के वासियों को बड़े आदर और श्रद्धा की दृष्टि से देखता हूँ। मेरे हज़ारों सलाम हों उन पर।

इस क्रांति को लाने वाली इस महान ग्रन्थ की कुछ और विशेषताएं आगे आयेंगी।

जीवन्त भाषा में जीवन्त ग्रन्थ

वेद, बाइबिल और अन्य धर्मों के ग्रन्थों और कुरआन मजीद के बीच एक बड़ा अन्तर पाया जाता है।

हिन्दू-धर्म की बुनियादी किताबें चारों वेद हैं और इन वेदों की भाषा संस्कृत है।

संस्कृत का अर्थ ही होता है, नयी भाषा और निखारी हुई भाषा।

अगर यह माना जाए कि वेद आरम्भ काल ही से इंसानों को मिले हैं, जैसा कि कुछ लोगों की धारणा है, तो इसका मतलब यह होता है कि वे असल संस्कृत में नहीं बल्कि संस्कृत से पहले की भाषा में रहे होंगे।

बाद में आने वाली भाषाओं में जब वेद लिखे गए तो स्पष्ट है कि असल वेद में और नई भाषा में लिखे गए वेदों में अन्तर एक स्वाभाविक बात है।

मगर कुरआन मजीद अरबी भाषा में अवतरित हुआ और बिल्कुल उसी अरबी भाषा में आज भी हमारे सामने है। उसमें बाल बराबर भी कोई फर्क नहीं पाया जाता।

यहूदियों की तौरात को देखिये। उसके अवतरण के शताब्दियों बाद इस्राइलियों ने उसे संकलित किया।

वास्तविकता यह है कि तौरात हज़रत मूसा अलैहि० पर इबरानी भाषा में अवतरित हुई थी। सैकड़ों साल के बाद उसको लिखा गया। फिर यह लिखा हुआ संग्रह नष्ट हो गया। लातीनी और यूनानी भाषा के बाइबिल ही शेष रहे। फिर इन भाषाओं में तौरात के अनुवाद से

इस्राइलियों ने फिर इबरानी भाषा में उसे रूपांतरित किया। इस तरह अनुवाद से असल भाषा में परिवर्तित की जाने वाली किताब का क्या हाल होगा, इसे हर व्यक्ति समझ सकता है।

डेड सी के निकट कुमरान गुफा में इबरानी भाषा में लिखे हुए जो कागज़ात मिले हैं वे भी केवल बाइबिल के कुछ इधर-उधर के हिस्से ही हैं। यह बाइबिल की नवीनतम खोज है।

अगर कोई ग्रन्थ अनुवादों पर निर्भर न करते हुए अपनी मूल भाषा में जिसमें वह अवतरित हुआ है मौजूद है तो वह क़ुरआन मजीद है। यह विशेषता उसी को प्राप्त है।

हजरत ईसा अलैहि० पर अवतरित होने वाली किताब सुरयानी की एक बोली 'आरामी' भाषा में थी। लेकिन उसको पहले पहल यूनानी भाषा में लिखा गया। फिर यूनानी से लातीनी भाषा में अनुवाद किया गया। फिर विभिन्न भाषाओं में। बाइबिल अपनी असल भाषा में मौजूद नहीं है, बल्कि अनुवाद की भाषा ही में हमारे पास है। जबकि क़ुरआन मजीद जिस भाषा में अवतरित हुआ था उसी भाषा में आज भी हमारे सामने है।

क़ुरआन मजीद के एक अन्य विशेष गुण पर विचार कीजिए।

□ हिन्दू धर्म के वेद अपनी असल भाषा के बजाय संस्कृत में लिखे गए, लेकिन संस्कृत भी आज बोलचाल की भाषा नहीं है।

□ यहूदियों की धार्मिक पुस्तक की भाषा इबरानी शताब्दियों तक बोलचाल की भाषा न थी। (इस्राईल ने इस भाषा को दोबारा अपनी जनता पर थोपा है)

□ इसी तरह हज़रत ईसा अलैहि० की भाषा 'आरामी' और गौतम बुद्ध की भाषा 'पाली' दोनों ही आज बोलचाल की भाषा नहीं हैं।

जिन-जिन भाषाओं में आसमानी पुस्तकों का अवतरण हुआ है वे सारी भाषाएं आज मुर्दा हो चुकी हैं। इसके विपरीत क़ुरआन और सिर्फ़ क़ुरआन ही बोलचाल की ज़िन्दा भाषा में ज़िन्दा किताब के रूप में हमारे सामने मौजूद है।

क़ुरआन मजीद के एक और अन्य गुण पर विचार कीजिए:

- ☐ चार वेद
- ☐ यहूदियों का ग्रन्थ तौरात
- ☐ हज़रत मसीह अलैहि० की इंजील
- ☐ गौतम बुद्ध का ग्रन्थ 'तम्मा बुदम'

ये सारे ही ग्रन्थ जिन महान व्यक्तियों को मिले थे उनके देहावसान के काफ़ी समय बाद इन ग्रन्थों का संकलन हुआ। परन्तु क़ुरआन और सिर्फ़ क़ुरआन ही वह ग्रन्थ है जिसको तत्काल ही क्रमबद्ध किया गया और जैसे-जैसे वह अवतरित होता गया वैसे-वैसे उसे क्रमबद्ध किया जाता और लिखा जाता रहा। प्यारे नबी सल्ल० इस काम की स्वयं देख-रेख करते रहे और इस सिलसिले में विशेष ध्यान देते रहे। आप सल्ल० के देहावसान के बाद ही पहले खलीफ़ा हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने पूरे क़ुरआन को नबी सल्ल० के बताए हुए क्रम के अनुसार एक जिल्द में एकत्र कर दिया। यह काम उन्होंने क़ुरआन की सुरक्षा के उद्देश्य ही से किया। जब क़ुरआन उतर रहा था तो नबी सल्ल० के साथी उसको झिल्लियों और पत्तों पर लिखते और नबी सल्ल० को सुनाते गए। क़ुरआन के सही तौर पर लिखे जाने का पूरा ख़्याल रखा गया।

जैसे-जैसे यह किताब अवतरित होती गयी वैसे-वैसे ख़ास सावधानी के साथ उसको ठीक-ठीक लिखने का प्रबन्ध होता रहा। इतने व्यवस्थित रूप में और सतर्कता के साथ लिखी जाने वाली किताब सिर्फ़ क़ुरआन मजीद ही है।

वह किताब जो किसी से छिपा कर नहीं रखी गई

क़ुरआन पाक की आयतें सारी की सारी अल्लाह की ओर से अवतरित हुई हैं।

वेद में ख़ुदा की शान में गाये हुए इन्सानों के गीत शामिल हैं।

तौरात में बनी इस्राइल का इतिहास और नबियों के उपदेश भी दाखिल कर दिए गए हैं।

इन्जील में इतिहास भी है और नबियों और सुधारकों के उपदेश और प्रवचन भी।

लेकिन क़ुरआन मजीद वह किताब है जिसमें सारी की सारी आयतें अल्लाह की तरफ से हैं। इन्सानों की नसीहत के लिए उसमें ऐतिहासिक घटनायें अन्तर और वाह्य जगत में पाए जाने वाले संकेतों का उल्लेख और ज्ञान और विवेक से परिपूर्ण उपदेश भी पाये जाते हैं मगर वे सब ख़ुदा ही की तरफ़ से अवतरित हुए हैं, नबी या किसी और की तरफ़ से उसमें कुछ भी शामिल नहीं किया गया है।

नबी सल्ल० के अपने शब्दों और कर्मों और उपदेशों एवं प्रवचनों को अलग से संकलित किया गया है। उनमें से किसी चीज़ को भी क़ुरआन में शामिल नहीं किया गया। इस तरह किसी प्रकार की मिलावट के बिना ख़ुदा के शब्दों का संकलन ही क़ुरआन मजीद है।

अन्य धर्मों की किताबें कुछ विशेष वर्गों के पढ़ने के लिए ही होती हैं। जैसे ब्रह्मामन, आचार्य और भिक्षु आदि।

वेद के एक मायने छिपाने योग्य चीज़ के भी होते हैं। अर्थात जिसे आम लोगों की नज़रों से छुपाकर रखना चाहिए। खुदा के शब्द खुदा के सब बन्दों के लिए हैं। बिना किसी भेदभाव के सभी ख़ास और आम के लिए हैं। सभी के पढ़ने के लिए और सभी के याद करने के लिए हैं। यह हिदायत सिर्फ़ क़ुरआन देता है।

क़ुरआन के हाफ़िज़ सैकड़ों और हज़ारों की संख्या में हर देश और हर ज़माने में पाये गये हैं। यह विशेषता भी सिर्फ़ इसी किताब (क़ुरआन) को प्राप्त है।

इतिहास से मालूम होता है कि बहुत से लोगो को वेद पढ़ने या सुनने पर सज़ा का भागीदार ठहराया गया है और सज़ायें दी भी गयी हैं।

इसके विपरीत क़ुरआन की खूबी यह है कि वह कहता है कि यह वाणी खुदा की तरफ़ से है। इसका सुनना और पढ़ना हर एक के लिए ज़रूरी और सौभाग्य की बात है।

इतिहास साक्षी है कि तिरुकोतियो के मन्दिर के निकट वेद पढ़ने के जुर्म में रामानुज को यातनाएं दी गयीं।

क़ुरआन की शिक्षा तो यह है कि दूसरों के लिए इसका अवसर उपलब्ध कराया जाए कि वे अल्लाह की वाणी सुनें। शायद कि उन्हें हिदायत मिल जाए।

वेद की व्याख्या बयान करने वाले आदि शंकराचार्य का उन की माँ के देहान्त के मौक़े पर समाज ने बाईकाट किया। दूसरी तरफ क़ुरआन को बुलन्द आवाज़ से पढ़ने वाले हज़रत अली रज़ि० को 'बाबुल इल्म'(ज्ञान का द्वार) कहा गया। अल्लाह की किताब उस के बन्दों के लिए है और इन्सानों को उसे पढ़ना चाहिए, इस बात की शिक्षा ताकीद के साथ सिर्फ़ इस्लाम ही देता है।

इस शिक्षा और ताकीद का असर यह हुआ कि क़ुरआन नष्ट होने से बच गया।

आज मराकश से लेकर इराक़ तक लगभग बीस करोड़ लोगों की बोलचाल की भाषा क़ुरआनी भाषा अरबी है।

क़ुरआन ने दुनिया के लोगों को भी जीवन-सन्देश दिया और साथ ही अरबी भाषा को भी जीवन्त एवं अमर बना दिया।

कुछ आसमानी पुस्तकें मानव-जीवन से सम्बन्धित अनावश्यक बातें पेश करती हैं जिनके कारण विभिन्न प्रकार की उलझनें और पेचीदगियाँ पैदा हो जाती हैं। कुछ अन्य प्रकार की धार्मिक पुस्तकें ऐसी हैं कि वे इन्सान और उसकी समस्याओं से कोई बहस नहीं करतीं, बल्कि दर्शन-शास्त्रों का केवल एक गोरख धन्धा मालूम होती हैं पहली प्रकार की पुस्तकें लोगों को अकारण अनावश्यक ज़ंजीरों में जकड़ती हैं और दूसरी तरह की किताबें इन्सान को बेलगाम बना देती हैं। इसके विपरीत क़ुरआन मजीद की अपनी एक निराली शान है। यह किताब इन्सानों को एक ओर तो मौलिक आस्थाओं एवं धारणाओं की शिक्षा देती है, दूसरी ओर यह उन्हें क़ानून, नियम और अनुशासन सिखाती है, और इनकी पाबन्दियों को अनिवार्य बतलाती है। आस्थाओं, धारणाओं और नियमों को निश्चित करने के बाद वह मानव-चिन्तन और कार्य-शक्ति को इस बात की आज़ादी देती है कि वह क़ुरआन की प्रकृति और उसके मिजाज के अनुकूल रह कर अपना काम करे। इस तरह बुनियादी उसूलों की पाबन्दी के साथ गौण मामलों में कार्य एवं चिंतन की आज़ादी प्रदान करने वाली एक मात्र पुस्तक क़ुरआन मजीद है।

''प्यारे नबी सल्ल० से बढ़कर मामलों में मशविरा करने वाला हमने किसी को नहीं पाया''। अल्लाह के रसूल सल्ल० के साथियों ने प्यारे नबी सल्ल० की सेवा में यह श्रद्धांजलि पेश की है। यह विंशेष गुण प्यारे नबी सल्ल० को क़ुरआन ही की बरकत से हासिल हुआ।

हम देखते हैं कि आम धार्मिक पुस्तकें शासकों, पूंजिवादियों और ताकतवरों के हाथों को मज़बूत कर रही हैं और कमज़ोरों पर ज़ुल्म ढाने में सहायक सिद्ध हो रही हैं। लेकिन क़ुरआन मजीद वह 'किताब' है जो कमज़ोरों को सहारा देती है और ज़ालिमों को सख़्ती से पकड़ती है। निःसन्देह क़ुरआन मजीद को इन्सानी आज़ादी का चार्टर और मैग्नाकार्टा कहा जा सकता है, इसमें कोई अतिश्योक्ति की बात न होगी।

मानव जाति का मेगनाकार्टा

आम तौर से धार्मिक पुस्तकें दावा तो यह करती हैं कि वे इन्सानों को खुदा से मिलाती हैं, लेकिन व्यवहारतः जो चीज़ हमारे सामने आती है, वह यह कि वे इन्सानों को शासकों, पूँजीवादियों और पुजारियों आदि के आगे झुका देती हैं और जनता के हाथों को ज़ंजीरों से जकड़ने और उनको बिल्कुल बेबस बना देने का काम भी यही किताबें करती हैं।

शासकों को ईश्वर का अवतार, प्रतिनिधि और ईश्वर की छाया आदि उपाधियां दी गयीं। कुछ किताबों में आज़ादी की बात केवल कह दी गई है, लेकिन व्यवहारतः इन्सान को इन्सानी गुलामी से मुक्ति दिलाने में वे नाकाम रही हैं। दूसरी तरफ हम देखते हैं कि क़ुरआन मजीद पुकार-पुकार कर कहता है कि इन्सान को इन्सान की बंदगी नहीं करनी चाहिए। इंसान को इन्सान का अनुसरण नहीं करना चाहिए। इंसान को इंसान की पूजा नहीं करनी चाहिए। इंसान को दूसरे इंसानों के आगे हाथ नहीं फैलाना चाहिए। कुरआन ने इन शिक्षाओं को इतने विस्तार से बयान किया है कि उसके मानने वालों की रगों में ये विचार ख़ून बनकर दौड़ने लगे। इस तरह क़ुरआन ने उपासना और बंदगी के योग्य केवल अल्लाह को बताया। उसने यह भी स्पष्ट कर दिया कि आज्ञापालन केवल अल्लाह का होना चाहिए और मदद भी सिर्फ़ उसी से मांगी जानी चाहिए।

इस शिक्षा को ग्रहण करने से क्या होता है और व्यवहारतः क्या हुआ? इन्सान पर से इंसान की खुदाई मिटा दी गई। इंसान का इंसान पर जुल्म और हर प्रकार की ज़्यादती बन्द हो गई। मानव-चिंतन और विकास पर रोक लगाने वाली रुकावटों को ख़त्म कर दिया गया।

इंसान को सच्ची आज़ादी मिली। हर एक खुदी की आंख खुली। इंसानी जीवन से अंधेरे ख़त्म हुए और प्रकाश की धारा प्रवाहित हो गई।

मानव चिंतन की फुलवारी में मधुर पवन के झोंके आये और इंसान खुशी और हर्ष से झूमने लगा। इंसान पर से इंसानी खुदाई को पूर्णतः समाप्त करने की अद्वितीय सफलता जिस किताब के हिस्से में आई, उस किताब का नाम है क़ुरआन मजीद!

इससे बढ़कर मानव-अधिकारों का घोषणा-पत्र मानव जाति ने कभी नहीं देखा। मेग्नाकार्टा से कहीं ज़्यादा, बहुत महान मानव-अधिकारों का घोषणा-पत्र अगर कोई है तो यह ग्रंथ क़ुरआन मजीद है।

इस किताब ने गुलामों के हाथों में पड़ी हुई ज़ंजीरों को तोड़ा। सारे इंसानों को एक ही पंक्ति में समान अधिकारों के साथ ला खड़ा किया। इंसानी आज़ादी का यह विधान, रोशनी का यह मीनारा सारे इंसानों को संबोधित करके कहता है:

'इंसानो! हमने तुमको एक ही मर्द और औरत से पैदा किया और फिर तुम्हारे क़बीले और वंश बना दिये ताकि तुम एक-दूसरे को पहचानो।' (हुजरात : १३)

इस शिक्षा ने लोगों को बताया कि मानव-जाति एक कुटुम्ब है। एक-दूसरे को पहचानने के लिये ही क़बीले, वंश और परिवार बने हैं।

- □ जन्म के आधार पर ऊंच-नीच,
- □ जाति के आधार पर ऊंच-नीच। और
- □ परिवार के आधार पर ऊंच-नीच।

ये सभी भेद-भाव जड़ से उखाड़ कर फेंक दिए गए। सारे इंसान स्वतंत्र पैदा हुए हैं, वे सब समान अधिकारों और समान जीवन के अधिकारी हैं।

यहां यह सवाल पैदा होता है कि इंसानों को दूसरों की हुकूमत से रिहाई दिलाकर और उन्हें समान अधिकार प्रदान करके क्या क़ुरआन ने उन्हें बेलगाम छोड़ दिया? क्या उन्हें सरकश बना दिया? क्या उन्हें

ज़िम्मेदारियों से मुक्त कर दिया? नहीं, नहीं, हरगिज़ नहीं।

कुरआन ने अल्लाह का तक़वा इख़्तियार क़रने की ताकीद की। सिर्फ़ एक ख़ुदा से डरो दूसरों से न डरो, इसका आदेश दिया। इन शिक्षाओं के द्वारा ईश-भय दिल में बिठाकर केवल ईश्वरीय क़ानूनों के आगे नतमस्तक होने का बुलन्द हौसला कुरआन ने इंसान को दिया।

अत्याचारी शासकों, अन्याय पर आधारित क़ानूनों, शोषण करने वालों, युद्ध, बीमारी, मौत, निर्धनता और दरिद्रता, धन और प्रतिष्ठा की क्षति, इन तमाम आशंकाओं से न डरने न घबराने और न डगमगाने की शिक्षा एवं प्रशिक्षण देकर कुरआन ने इंसान को बहादुर, प्रतिष्ठित और गौरवपूर्ण बना दिया। इन्सान को इन महान गुणों से मालामाल करने वाली एक ही किताब है, और वह है, कुरआन मजीद।

रेगिस्तान की गोद में पलने वाले अरब अपने क़बीलों के गृह-युद्ध में उलझे हुए थे। समकालीन सभ्यता और संस्कृति की उन्हें हवा तक न लगी थी। इस महान पुस्तक ने ऐसे लोगों को सभ्यता और सुशीलता से सुसज्जित कर दिया और उन्हें दुनिया पर शासन करने की क्षमता, विवेक और उपायों से अवगत कराके उन्हें हर प्रकार से बहादुर बना दिया।

यह बड़ा कारनामा वास्तव में कुरआन की क्रांतिकारी शिक्षाओं का परिणाम है। मैं इस सत्य की घोषणा बिना किसी असमंजस्य के हिमालय की चोटियों पर खड़े होकर करने के लिए तैयार हूँ।

इस दिव्य ग्रन्थ की एक विशेषता यह है कि इसने हर क़दम पर इस बात की ताकीद की है कि आदमी हर हालत में न्याय पर जमा रहे और कभी भी इन्साफ़ का दामन हाथ से न छूटने दे। हक़ और इन्साफ़ का दामन छोड़ने वालों को इसने आख़िरत के दर्दनाक अज़ाब से डराया है। आपके अपने रिश्तेदार का मामला हो तब भी उनके लिए हक़ और इन्साफ़ का दामन न छोड़ो। इस बात की ताकीद क़ुरआन करता है। इसी न्याय और इन्साफ़ की शिक्षा का असर है कि इस्लामी हुकूमत के अद्वितीय हक़ और इन्साफ़ के नमूने इतिहास में सुरक्षित हैं।

इन्सान की आज़ादी, इन्सानी बराबरी और न्याय इन तीन उत्कृष्ट मौलिक सिद्धांतों पर कुरआन मजीद मानव समाज का निर्माण करता है।

क़ुरआन का एक और विशेष गुण देखिए:

बहुत सी धार्मिक पुस्तकें इन्सान के सांसारिक जीवन को पाप का जीवन कहती हैं। उससे जल्द से जल्द छुटकारा पाने की, उसको त्याग देने की और उसको छोड़ देने की शिक्षा देती हैं।

इसके विपरीत क़ुरआन यह कहता है कि इन्सान ख़ुदा की एक उत्कृष्ट रचना है। वह जीवन में मानव कर्तव्यों के महत्व को उजागर करता है, इन कर्तव्यों को पूरा करने की ताकीद करता है।

वह कहता है कि इन कर्तव्यों को पूरा करने के परिणाम स्वरूप तुम्हें एक पूर्ण जीवन मिलेगा और जीवन में सौंदर्य एवं आकर्षण पैदा होगा। हम कह सकते हैं कि मानव जीवन को आदर और प्रतिष्ठा की दृष्टि से देखने वाली किताब सिर्फ़ क़ुरआन मजीद है।

यह किताब ज़िन्दगी के झमेलों से भागने की शिक्षा नहीं देती बल्कि यह किताब तो कहती है कि ज़िन्दगी के इसी संघर्ष से पूर्ण जीवन इन्सान को प्राप्त होता है।

□ ऐसी विशेषताओं से परिपूर्ण यह किताब वास्तव में ईश्वरीय किताब है।

□ ऐसी नेमतों से मालामाल करने वाली यह किताब अवश्य ही पवित्र किताब है।

□ ऐसी बुलन्दियों तक पहुंचाने वाली यह किताब निःसंदेह महान किताब है।

रसूल इन्सान ही होते हैं

इन्सानों के अन्दर सच्चाई, शिष्टाचार और लज्जा आदि गुण पैदा करने और इनकी शिक्षा देने के लिए प्यारे नबी सल्ल० को भेजा गया।

उन्होंने बड़ी ही सादगी से ये महान शिक्षायें, ज्ञान और विवेक से भरपूर शिक्षायें इन्सानों को दीं।

फलाँ ईश्वर के अवतार हैं, फ़लाँ ईश्वर का अंश हैं, फ़लाँ ईश्वर के पुत्र हैं, साधारणतः इन दावों के साथ बहुत से धर्मों का आविर्भाव हुआ और उनको दुनिया ने माना भी और उनकी पैरवी करने की कोशिश की।

लेकिन इस्लाम धर्म में हम देखते हैं कि मुहम्मद सल्ल० को न खुदा कहा जाता है न खुदा का बेटा कहा जाता है न खुदा का अवतार कहा जाता है।

प्यारे नबी सल्ल० सीधे-सादे मनुष्य नज़र आते हैं, लेकिन एक पवित्राचारी मनुष्य, एक महान चरित्र के अधिकारी मनुष्य। कुरआन एलान करता है:

''हे नबी! कह दो कि मैं तो बस एक इन्सान हूँ तुम्हीं जैसा। मेरी तरफ वह्य की जाती है कि तुम्हारा खुदा बस एक ही खुदा है।''

(अल-कहफ़ : ११०)

कुरआन में अनेकों बार नबी सल्ल० की जुबानी यह ऐलान कराया गया है कि वे कहें कि वे इन्सान हैं। पवित्राचारी इन्सान।

- मैं किसी चमत्कार का प्रदर्शन नहीं करूंगा।
- मेरे पास आसमानों के ख़ज़ाने नहीं हैं।
- मैं परोक्ष का ज्ञान नहीं रखता।
- मैं इन्सान हूं तुम ही जैसा इन्सान।

इन घोषणाओं के साथ अगर किसी ने किसी दीन को क़ायम किया है तो वह प्यारे नबी सल्ल० ही हैं।

कुरआन स्पष्ट शब्दों में कहता है कि:

''तुम मुर्दों को नहीं सुना सकते, न उन बहरों तक अपनी आवाज़ पहुंचा सकते हो जो पीठ फेरकर भागे जा रहे हों और न अन्धों को रास्ता बताकर भटकने से बचा सकते हो। तुम तो अपनी बात उन ही लोगों को सुना सकते हो जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं और फिर फ़रमांबरदार बन जाते हैं।''

(अन-नमल : ८०-८१)

अतः यह बात स्पष्ट हो जाती है कि प्यारे नबी सल्ल० ने किसी चमत्कार को प्रदर्शित करने की कोशिश नहीं की और न खुदाई में शरीक होने का दावा किया। सीधी राह दिखाने के लिए भेजे गए वे एक इन्सान ही थे।

बात सिर्फ़ इतनी ही नहीं। कुरआन कहता है कि इस सत्य मार्ग से अगर नबी सल्ल० भी हटें तो कोई ताक़त उन्हें खुदा की पकड़ से न बचा सकेगी:

''और अगर तुमने इस इल्म के बाद जो तुम्हारे पास आ चुका है, उन (अधर्मियों) की इच्छाओं का पालन किया तो अवश्य ही तुम्हारी गणना ज़ालिमों में होगी।''

(अल-बक़रः १४५)

कुरआन फिर कहता है:

''अगर इस इल्म के बाद जो तुम्हारे पास आ चुका है तुमने उन (अधर्मियों) की इच्छाओं की पैरवी की तो अल्लाह की पकड़ से बचाने वाला कोई दोस्त और मददगार तुम्हारे लिए नहीं है।''

(अल-बकरः१२०)

जब हम इन आयतों को पढ़ते हैं तो दिल कांप उठता है। मानवता के लिए जिसे 'बेहतरीन आदर्श' कहा गया, क्या वह खुदा को छोड़कर अपनी इच्छाओं की पैरवी कर सकता है कि वह सज़ा का भागीदार हो। नहीं, हरगिज़ ऐसा नहीं हो सकता। फिर भी कुरआन स्पष्ट शब्दों में सावधान करता है कि नबी सल्ल० से भी अगर ग़लती हो जाय तो उनको अल्लाह की पकड़ से बचाने वाला कोई दोस्त और मददगार न होगा।

क्या किसी धार्मिक पुस्तक में उसके लाने वाले को इतनी खुली और स्पष्ट चेतावनी दी गई है? मैं कहूंगा कि बिल्कुल नहीं।

मैं एक इन्सान हूँ तुम्हीं जैसा। मैं भी कोताही करूं तो अल्लाह के यहां पकड़ा जाऊंगा। इस दावे के साथ किसी धर्म को प्रस्तुत करने वाला अगर कोई है तो वह नबी सल्ल० हैं। यदि कोई धर्म ऐसा पैग़म्बर दे सका है तो वह सिर्फ इस्लाम धर्म है।

फिर इसके साथ एक आश्चर्यजनक बात और भी है, जो हमें आम धर्मों के इतिहास में कहीं नहीं मिलती और वह यह कि प्यारे नबी को उनके ज़माने में भी इंसान ही समझा गया और देहांत के बाद भी आज तक इन्सान ही समझा जा रहा है और हमेशा इन्सान ही समझा जाएगा।

कितने ही धार्मिक गुरु इन्सान के रूप में पैदा हुए, ज़िंदगी में इन्सान बनकर रहे। उन्होंने समाज में सुधार और भलाई के कार्य किए और फिर उनका देहांत हो गया। लेकिन उनकी आंखें बन्द होते ही उन्हें ख़ुदा का दर्जा दे दिया गया।

मिसाल के तौर पर गौतम बुद्ध को लीजिए। वे पैदा तो इंसान ही हुए थे, हाँ यह ज़रूर है कि वे भले कार्य करते थे और भलाई का प्रचार करते थे। लेकिन जैसे ही उनका देहांत हुआ, उन्हें ख़ुदा बना लिया गया। लेकिन इस्लाम में नबी सल्ल० को कभी ख़ुदा का दर्जा नहीं दिया गया। वे बस इन्सान हैं, चरित्र से सुसज्जित इन्सान और पैगंबर होने की हैसियत से संपूर्ण मानव-जाति के लिए 'बेहतरीन नमूना।

इसी हद तक आप सल्ल० की प्रशंसा पिछले चौदह सौ सालों से की जा रही है। ख़ुदा का दर्जा आप सल्ल० को कभी नहीं दिया गया।

इस्लाम : अन्नादुराई की दृष्टि में

भूतपूर्व मुख्यमंत्री तमिलनाडु मिस्टर अन्नादुराई[1] ने ७ अक्तूबर १९५७ ई० को हज़रत मुहम्मद सल्ल० की सीरत के विषय पर एक भाषण दिया था, जिसे यहां प्रस्तुत करना लाभप्रद सिद्ध होगा। अपने भाषण में मिस्टर अन्नादुराई ने कहा था कि,

---

१. मिस्टर अन्नादुराई डी.एम.के. के संस्थापक थे। वे डी.एम. के. सरकार के पहले मुख्यमंत्री निर्वाचित हुए थे। वे एक राजनीतिज्ञ ही नहीं एक मनीषी भी थे। डी. एम. के. तथा ए. आई. डी. एम. के. के क्षेत्रों में उन का नाम बड़े आदर से लिया जाता है।

''इस्लाम के सिद्धान्तों और धारणाओं की जितनी ज़रूरत छठी शताब्दी में दुनिया को थी, उससे कहीं बढ़कर उनकी ज़रूरत आज दुनिया को है, जो विभिन्न विचारधाराओं की खोज में ठोकरें खा रही है और कहीं भी उसे चैन नहीं मिल सका है।

इस्लाम केवल एक धर्म नहीं है, बल्कि वह एक जीवन-सिद्धांत और अति उत्तम जीवन-प्रणाली है। इस जीवन-प्रणाली को दुनिया के कई देश ग्रहण किए हुए हैं।

मेरे अपने धार्मिक विचारों और सीरत की इस सभा में मेरी उपस्थिति के बीच कोई प्रतिकूलता नहीं है। इस्लाम को एक जीवन प्रणाली समझ कर ही मैं इस सभा में शरीक हुआ हूँ।

जीवन-सम्बन्धी इस्लामी दृष्टिकोण और इस्लामी जीवन-प्रणाली के हम इतने प्रशंसक क्यों हैं? सिर्फ इसलिए कि इस्लामी जीवन-सिद्धान्त इन्सान के मन में उत्पन्न होने वाले सभी संदेहों और आशंकाओं का जवाब सन्तोषजनक ढंग से देते हैं।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की शिक्षाओं में सबसे पहली शिक्षा यह है: 'खुदा के साथ किसी को शरीक न किया जाए'। इस शिक्षा का मैं दिल से आदर करता हूँ और इसे आदर और प्रशंसा की दृष्टि से देखता हूँ।

इस शिक्षा का आदर इतना क्यों किया जाय?

इसलिए कि यह शिक्षा मानव-चिन्तन को सोचने पर विवश करती है और सोचने पर उभारती है।

खुदा के साथ किसी को शरीक न किया जाय। क्यों न किया जाय? खुदा की सत्ता और गुण क्या हैं? इन्सान के लिए इन तमाम बातों पर सोचने का पूरा सामान यह शिक्षा जुटाती है।

एक तमिल मनीषी ने कहा है:

जिसने देखा उसने पाया नहीं,
जिसने पाया उसने देखा नहीं।
जिसने देखा उसने कहा नहीं,
जिसने कहा उसने देखा नहीं।

ख़ुदा के गुण असीमित हैं। उसमें खोजाना और निरन्तर उस में आगे बढ़ना ही कमाल है।

ख़ुदा के साथ किसी को शरीक करने का मतलब यह होता है कि किसी को हम ख़ुदा के समकक्ष समझें।

ख़ुदा का शरीक कौन हो सकता है? इसलिए नबी सल्ल० ने शिर्क से मना किया है।

अन्य धर्मों में शिर्क की शिक्षा मौजूद होने से हम जैसे लोग बहुत सी हानियों का शिकार हुए हैं। शिर्क के रास्तों को बन्द करके इस्लाम इन्सान को बुलन्दी और उच्चता प्रदान करता है और पस्ती और उसके भयंकर परिणामों से मुक्ति दिलाता है।

इस्लाम इन्सान को सिद्ध पुरुष और भला मानव बनाता है। ख़ुदा ने जिन बुलन्दियों तक पहुंचने के लिए इन्सान को पैदा किया है, उन बुलन्दियों को पाने और उन तक ऊपर उठने की शक्ति और क्षमता, इन्सान के अन्दर इस्लाम के द्वारा पैदा होती हैं।

ख़ुदा के लिए संभव था कि वह स्वयं प्रकट होकर इन्सान को यह आदेश देता कि 'मुझे ख़ुदा मान ले।' इस सूरत में इन्सान के लिए अपनी चिंतन-शक्ति से काम लेने का कोई अवसर शेष न रहता। इस तरह इंसान की चिंतन-शक्ति को बड़ा आघात पहुंचता और इन्सान मानसिक एवं चिंतन-विकास से वंचित रह जाता। लेकिन नबी को भेजकर उनके द्वारा जब ख़ुदा ने यह संदेश दिया कि 'ये मेरी तरफ़ से भेजे हुए रसूल हैं।'—तो यह अनिवार्य हो गया कि इन्सान चिंतन-मनन से काम ले। क्या नुबूवत का दावा करने वाले इस व्यक्ति को वास्तव में ख़ुदा ने भेजा है? क्या उसके अन्दर वे उच्च गुण पाये जाते हैं, जिनसे एक नबी को सुसज्जित होना चाहिए? इन सारी बातों को सोचने पर इन्सान विवश होता है। एक तमिल कवि कहता है: 'ज्ञान और बोध ही ख़ुदा है।' ख़ुदा ही ज्ञान और बोध है। वास्तविक ज्ञान और सच्चा बोध ही इन्सान को ख़ुदा से अवगत कराते हैं। ख़ुदा से बे-परवाह लोगों के पास न ज्ञान होता है, न बोध। चाहे वे अपने ज्ञान के कितने ही बड़े दावेदार क्यों न हों।

इस्लाम की एक अन्य ख़ूबी यह है कि उसको जिसने भी अपनाया वह

जात-पात के भेदभाव को भूल गया।

मुदगुत्तूर![1] में एक-दूसरे की गर्दन मारने वाले जब इस्लाम ग्रहण करने लगे तो इस्लाम ने उनको भाई-भाई बना दिया। सारे भेदभाव समाप्त हो गए। नीची जाति के लोग नीचे नहीं रहे, बल्कि सबके सब प्रतिष्ठित और आदरणीय हो गए। सब समान अधिकारों के मालिक हो कर बन्धुत्व के बन्धन में बँध गए।

इस्लाम की इस ख़ूबी से मैं बहुत प्रभावित हुआ हूँ। बरनाडशा, जो किसी मसले के सारे ही पहलुओं का गहराई के साथ जायज़ा लेने वाले व्यक्ति थे, उन्होंने इस्लाम के उसूलों का विश्लेषण करने के बाद कहा था:

"दुनिया में बाक़ी और क़ायम रहने वाला दीन यदि कोई है तो वह केवल इस्लाम है।"

नबी सल्ल० को हम क्यों एक महान पुरुष मानते हैं और हम उनकी प्रशंसा और बड़ाई क्यों करते हैं?

आज १९५७ ई० में जब हम मानव-चिंतन को जागृत करने और जनता को उनकी ख़ुदी से अवगत कराने की थोड़ी-बहुत कोशिश करते हैं तो कितना विरोध होता है। चौदह सौ साल पहले जब नबी सल्ल० ने यह संदेश दिया कि बुतों को ख़ुदा न बनाओ। अनेक ख़ुदाओं को पूजने वालों के बीच खड़े होकर यह ऐलान किया कि बुत तुम्हारे ख़ुदा नहीं हैं। उनके आगे सिर मत झुकाओ। सिर्फ एक स्रष्टा ही की उपासना करो।

इस एलान के लिए कितना साहस चाहिए था, इस संदेश का कितना विरोध हुआ होगा। विरोध के तूफान के बीच पूरी दृढ़ता के साथ आप सल्ल० यह क्रांतिकारी संदेश देते रहे, यह आप सल्ल० की महानता का बहुत बड़ा सुबूत है।

यह दृढ़ता जो नबी सल्ल० के अन्दर थी उसका अनुसरण आज भी इस्लाम के अनुयायी करते हैं।

इस्लामी जीवन-प्रणाली इन्सानों में एकता पैदा करती है। इन्सानों

---

१. यह तमिलनाडु का एक गाँव है जहाँ ऊँची जात और नीची जात वालों के बीच भयानक दंगे हुए थे।

के अन्दर जागृति लाती है । इन्सानों में बन्धुत्व और प्रेम के संबंध पैदा करती है ।

जबकि आम धर्म इन्सानों में पक्षपात के भावों को बढ़ावा देते हैं । एक को दूसरे से लड़ाते हैं । यहां तक कि पुलिस को हस्तक्षेप करना पड़ता है । इसके विपरीत यह जीवन-सिद्धांत और यह जीवन प्रणाली मुहब्बत और प्रेम की बुनियाद पर इन्सानों को संगठित कर देती है ।

धर्म और सही जीवन-प्रणाली में अन्तर नहीं हो सकता । अन्तर उस समय होता है जबकि धर्म की कल्पना अपूर्ण और सीमित हो । यहां तक कि यह समझ लिया जाय कि धर्म का जीवन की आम समस्याओं और मामलों से कोई संबंध नहीं होता ।

सत्य-धर्म को जो स्वयं एक जीवन—प्रणाली है, अगर व्यावहारिक रूप दिया जाय तो उससे इन्सानों को फ़ायदा ही पहुंचेगा, नुक़्सान नहीं । इसके लिए एक ऐसा वातावरण बनाना होगा जहां यह जीवन—प्रणाली स्वस्थ रूप से अपना कार्य कर सके । और जहां वह इन्सानों को न्याय, आदर—सम्मान, सुख—शांति और वह सब कुछ दिला सके जिसके वे ज़रूरतमन्द हैं ।

माहौल इन्सान बनाता है । जैसा माहौल होता है आमतौर से लोग उसी के अनुसार अपने को ढाल लेते हैं । जनता यह नहीं सोचती कि माहौल किसी जीवन—प्रणाली के स्वस्थ रूप से क्रियान्वित होने के लिए अवसर देता है या नहीं । वे तो भेड़ की तरह आंखें बन्द करके चलते हैं ।

बड़े लोग वे होते हैं जो इस बात का पता लगाते हैं कि माहौल की दिशा ठीक है या नहीं । जब वे देखते हैं कि माहौल की दिशा ग़लत है तो वे उसकी विपरीत दिशा में चलने लगते हैं । उन्हें इसकी परवाह नहीं होती कि यह विपरीत दिशा अपनाने से उन्हें सख़्त नुक़्सान पहुंच सकता है । सच्ची और सही जीवन—प्रणाली को पूर्ण रूप से व्यावहारिक रूप देने के लिए वे विपरीत दिशा में चलने का दृढ़ निश्चय करते हैं और उस दिशा में चल पड़ते हैं, यहां तक कि ग़लत माहौल को एक अच्छे माहौल में बदल कर रख देते हैं । तकलीफ़ें झेलने और मुसीबतों का शिकार हाने के बावजूद जो लोग सत्य—मार्ग पर चलने का साहस रखते हैं, वास्तव में वही

काम के आदमी हैं । ऐसे ही साहसी लोग वक़्त से टक्कर लेकर एक ऐसे माहौल का निर्माण कर रहे हैं जिसमें सही जीवन–प्रणाली को व्यावहारिक रूप दिया जा सके ।

हज़रत मुहम्मद सल्ल० की गणना ऐसे ही महान और साहसी व्यक्तियों में होती है । बल्कि आप सल्ल० की महानता आम बड़े व्यक्तियों से बढ़कर सामने आई है ।

ऐसे महान पुरुष की शिक्षाओं को देश में आम करना चाहिए । इन शिक्षाओं को आम करने के लिए अच्छा माहौल चाहिए और अच्छे माहौल के निर्माण के लिए अच्छी शिक्षा की व्यवस्था का होना अनिवार्य है । अच्छी शिक्षा की व्यवस्था उसी समय संभव है, जबकि हुकूमत अच्छी हो और हम किसी अच्छी हुकूमत की कल्पना भी नहीं कर सकते जब तक कि अच्छे शासक न हों । यह अच्छे शासक अच्छे लोगों ही से मिल सकते हैं । इससे भले और नेक लोगों के महत्व और उनकी ज़रूरत का भलीभांति अनुमान लगाया जा सकता है । ऐसे लोग ही वास्तव में किसी समाज की असल पूँज़ी होते है, जिन पर समाज का भविष्य निर्भर करता है । ऐसे लोगों की क्षति मानवता का सबसे बड़ा नुक़्सान है ।

इस्लाम हीरे के समान है । हीरे का इस्तेमाल लोग विभिन्न ढंग से करते हैं । कोई उसे अंगूठी में जड़ लेता है तो कोई ज़ेवरात में और कोई उसे बेच कर प्राप्त हुई रक़म को भोग–विलास में उड़ा देता है ।

हीरे के महत्व और लाभ या उसकी क्षति का संबंध वास्तव में इससे है कि इन्सान उसे किस तरह प्रयोग करता है । हमें सोचना चाहिए कि हीरे से कहीं ज़्यादा मूल्यवान और महत्वपूर्ण जीवन–प्रणाली के साथ हमारा व्यवहार क्या है ।

क्या यह धर्म अत्याचारियों या दुष्टों का साथ देगा? क्या यह मजबूरों का हक़ मारेगा? या इसके विपरीत यह धर्म उत्पीड़ितों और शोषित लोगों की मदद करेगा?

व्यवहार की दुनिया में अगर पहली क़िस्म के परिणाम ही सामने आ रहे हों तो चाहे हम इस्लाम की कितनी ही प्रशंसा और बड़ाई करते रहें इसका कोई महत्व नहीं । हाँ, अगर परिणाम दूसरी सूरत में दिखाई दे रहे

हों तो अवश्य लोग यह मान सकते हैं कि यह प्रणाली दुनिया के लिए रहमत होगी।

इस्लाम अपनी सारी खूबियों और चमक–दमक के साथ हीरे की तरह आज भी मौजूद है। अब इस्लाम के अनुयायियों का यह कर्त्तव्य है कि वे इस्लाम धर्म को सच्चे रूप में अपनायें। इस तरह वे अपने रब की प्रसन्नता और खुशी भी हासिल कर सकते हैं और गरीबों और मज़बूरों की परेशानी भी हल कर सकते हैं। और मानवता भौतिकी एवं आध्यात्मिक विकास की ओर तीव्र गति से आगे बढ़ सकती है।''

इस्लाम – संसार की सुप्रसिद्ध विभूतियों की दृष्टि में

हमारे यहां के बुद्धिजीवी अन्नादुराई ने प्यारे नबी सल्ल० को जिस आदर की दृष्टि से देखा, उसका उल्लेख हम ऊपर कर चुके हैं। केवल अन्नादुराई ही नहीं, बल्कि दुनिया के विभिन्न देशों के विद्वानों और विचारकों सभी ने नबी सल्ल० की महानता को स्वीकार किया है। नेपोलियन से लेकर इन्साइक्लोपेडिया आफ ब्रिटानिका के संपादकों तक सभी ने हज़रत मुहम्मद सल्ल० की सेवा में श्रद्धांजलि प्रस्तुत की है।

नेपोलियन ने कहा था: 'वह दिन दूर नहीं कि सारे ही देशों के नीतिज्ञ मिलकर कुरआन के सिद्धांतों के अनुसार एक ही ढंग के शासन को अपनायेंगे। कुरआन की शिक्षायें और उसके सिद्धांत सत्य पर आधारित हैं और मानव–जाति को खुशियों और खुशहालियों से मालामाल करने वाले हैं। अत: खुदा के भेजे हुए रसूल मुहम्मद सल्ल० और उन पर अवतरित की हुई किताब कुरआन पर मुझे गर्व है और मैं आप सल्ल० की सेवा में श्रद्धांजलि पेश करता हूं।'

गाँधी जी ने कहा: 'कुरआन का अनेक बार मैंने ध्यानपूर्वक अध्ययन किया। सच्चाई और अहिंसा की शिक्षा उसमें देखकर मुझे अत्याधिक प्रसन्नता हुई।'

डा. सेमुअल जानसन अपनी जगत–प्रसिद्ध पुस्तक 'ओरियन्टल रीलीजेन्स' में लिखते हैं: ''कुरआन न गद्य है न पद्य, फिर भी वह अपने अन्दर गद्य का ज़ोर भी रखता है और पद्य का सौंदर्य भी। वह न इतिहास है न किसी की जीवन–चर्या, फिर भी नसीहत और शिक्षा की दृष्टि से वह सबसे ज़्यादा प्रभावकारी है।

हज़रत मूसा को तौरात एक ही समय में मिली थी, लेकिन कुरआन एक ही समय अवतरित नहीं हुआ और न एक ही समय पेश किया गया। प्लेटो की किताब में सर्वेक्षण और खोज का तरीक़ा अपनाया गया है लेकिन कुरआन का तरीक़ा और उसकी शैली स्वयं उसकी अपनी है। वह एक आह्वानकर्त्ता की पुकार है। हिकमतों से भरी हुई, जद्दोजहद की स्पिट और अमल का जोश भर देने वाली किताब। अपने संदेश का विरोध करने वालों को चुनौती देने वाली किताब, दर्द और सहानुभूति के साथ उन्हें समझाने वाली किताब। वह इतनी ज्ञानपूर्ण तथा व्यापक पुस्तक है कि हर देश और हर ज़माने के लोग, जानें–अनजाने, चाहे–अनचाहे उसकी शिक्षाओं के प्रभाव में अपने को रखने पर विवश हैं। उसकी प्रतिध्वनि सदनों में भी सुनी जा रही है और रेगिस्तानों में भी। नगरों में सुनी जा रही है और देहातों में भी। बिना किसी भेद–भाव के हर एक पर इसकी छाप पड़ रही है।

सबसे पहले इस किताब ने अपने संदेश को अपनाने वालों के दिलों को गर्माया। फिर उनको एक सामूहिक आंदोलन में परिवर्तित किया। यह आंदोलन तूफ़ान की तरह उठा और ईरान तथा एशिया के विभिन्न देशों से गुज़रता हुआ दूर तक जा पहुंचा। वहां जो भी निर्माणात्मक विचारधाराएं मौजूद थीं, उनको इस आन्दोलन ने अपने अन्दर समो लिया और अन्धकारों में भटकने वाले ईसाई यूरोप को ज्ञान और बुद्धिमता की सीख दी।'

कुरआन मजीद के पहले अंग्रेज़ी अनुवादक मिस्टर राडवेल ने अपनी

भूमिका में कुरआन मजीद की प्रशंसा इस प्रकार की है:

''अरब के जाहिल, अघंढ़ और असभ्य लोगों को एक थोड़ी सी अवधि में दुनिया के नेतृत्व और शासन के योग्य इस किताब ने बनाया। मानो किसी ने जादू की छड़ी घुमा दी और एक महान क्रांति अरबों में तुरन्त आ गई।''

पहली जनवरी १९४५ ई० को श्री मति सरोजनी नायडू ने मुस्लिम इन्स्टीट्यूट हाल आफ कलकत्ता में अपनी श्रद्धांजलि इन शब्दों में पेश की:

'कुरआन मजीद शिष्टाचार और न्याय का घोषणा—पत्र है। आजादी का चार्टर है। व्यावहारिक जीवन में सत्य एवं न्याय की शिक्षा देने वाली कानून की महान पुस्तक है।

कुरआन के अलावा कोई अन्य धार्मिक पुस्तक जीवन के सारे ही मामलों और पहलुओं की व्यावहारिक व्याख्या और हल पेश नहीं करती।'

जर्मनी के विद्वान गोयटे ने कहा:

'जब भी मैं कुरआन को देखता हूं, नए—नए मायने वह खोलता चला जाता है। यह किताब अपने पढ़ने वालों को धीरे—धीरे अपनी ओर खींचती जाती है और अन्ततः उसके मन—मस्तिष्क पर छा जाती है।'

प्रसिद्ध इतिहासकार गिब्न ने इन शब्दों में अपनी श्रद्धा प्रकट की है:

'एकेश्वरवाद को स्पष्ट शब्दों में बयान करने वाली और दिलों पर एकेश्वरवाद की छाप लगाने वाली महान पुस्तक कुरआन मजीद है।'

इन्साइक्लोपीडिया आफ ब्रिटानिका के संपादक लिखते हैं:

'दुनिया में सबसे ज़्यादा पढ़ी जाने वाली और कंठस्थ की जाने वाली पुस्तक कुरआन है। यह विशेषता दुनिया की अन्य किसी भी धार्मिक पुस्तक को प्राप्त नहीं है।'

वेदों ने भी हज़रत मुहम्मद के बारे में भविष्यवाणी की है

मुहम्मद स० अरब में छटी शताब्दी ई० में पैदा हुए, मगर इससे बहुत पहले उनके आगमन की भविष्यवाणी वेदों में की गई है। एक सज्जन से यह बात सुनकर मैंने इसकी खोज की, फिर वेदों में प्यारे नबी स० के आगमन की भविष्यवाणी को देखकर मैं आश्चर्यचकित रह गया। पुराण में भी आप स० की चर्चा हुई है। महाऋषि व्यास के अठारह पुराणों में से एक पुराण 'भविष्य पुराण' है। उसका एक श्लोक यह है:

'एक दूसरे देश में एक आचार्य अपने मित्रों के साथ आयेंगे। उनका नाम महामद होगा। वे रेगिस्तानी क्षेत्र में आयेंगें।'

(भविष्य पुराण अ० ३२३ सू० ५ से ८)

स्पष्ट रूप से इस श्लोक और सूत्र में नाम और स्थान के संकेत हैं। आने वाले महानपुरुष की अन्य निशानियां यह बयान हुई हैं:

'पैदाइशी तौर पर उनका ख़तना किया हुआ होगा। उनके जटा नहीं होगी। वह दाढ़ी रखे हुए होंगे। गोश्त खायेंगे। अपना संदेश स्पष्ट शब्दों में ज़ोरदार तरीक़े से प्रसारित करेंगे। अपने संदेश के मानने वालों को मूसलाई नाम से पुकारेंगे।'

(अध्याय ३ श्लोक २५, सूत्र ३)

इस श्लोक को ध्यान पूर्वक देखिए। ख़तने का रिवाज हिंदुओं में नहीं था। जटा यहां का धार्मिक निशान था। आने वाले महान पुरुष अर्थात मुहम्मद स० के अन्दर ये सभी बातें पाई जाती हैं और स्पष्ट रूप से पाई

जाती हैं। फिर इस संदेश के मानने वालों के लिए मूसलाई का नाम है। यह शब्द मुस्लिम और मुसलमान की ओर संकेत करता है।

अथर्व वेद अध्याय २० में हम निम्नलिखित श्लोक देख सकते हैं:

□ 'हे भक्तो! इसको ध्यान से सुनो। प्रशंसा किया गया, प्रशंसा किया जाने वाला वह महामहे महान ऋषि सांठ हज़ार नव्वे लोगों के बीच आयेगा।'

मुहम्मद के मायने हैं जिसकी प्रशंसा की गई हो। आप स० की पैदाइश के समय मक्का की आबादी साठ हज़ार थी।

'वे बीस नर और मादा ऊंटों पर सवारी करेंगे। उनकी प्रशंसा और बड़ाई स्वर्ग तक होगी। उस महा ऋषि के सौ सोने के आभूषण होंगे।'

ऊँट पर सवारी करने वाले महा ऋषि को हम भारत में नहीं पाते। अतः यह संकेत मुहम्मद स० ही की ओर है। सौ सोने के आभूषण से अभिप्रेत हबशा की हिजरत में जाने वाले आप सल्ल० के सौ प्राणोत्सर्गी मित्र हैं।

□ 'दस मोतियों के हार, तीन सौ अरबी घोड़े, दस हजार गायें उनके यहां होंगी।'

दस मोतियों के हार से संकेत आप स० के उन दस मित्रों की ओर है जिन्हें दुनिया ही में जन्नत की ख़ुशख़बरी दी गई।

बद्र की लड़ाई में हिस्सा लेने वाले ३१३ सहाबा को तीन सौ अरबी घोड़ों की उपमा दी गई है। दस हज़ार गायों से अभिप्रेत यह है कि आप स० के अनुयायियों की संख्या बहुत अधिक होगी।

क़ुरआने मजीद नबी स० को 'जगत के लिए रहमत' के नाम से याद करता है। ऋग्वेद में भी है:

'रहमत का नाम पाने वाला, प्रशंसा किया हुआ दस हज़ार साथियों के साथ आएगा।'
(मंत्र ५ सूत्र २८)

इसी तरह वेद में महामहे और महामद के नाम से भी आप स० के आगमन का उल्लेख है।

तुमसा हम किसे पाएंगे

मुसलमान जाहिल हैं, ज़िद्दी और गुस्सावर हैं। ज़ालिम और घमण्डी होते हैं। ये बातें आम तौर से ग़ैर–मुस्लिम भाइयों में फैली हुई हैं।

पता लगाया जाय और निकट जा कर देखा जाय तो एक दूसरी ही हक़ीक़त सूरज से ज़्यादा चमकदार सामने आती है।

इस्लाम के मायने ही हैं शांति और सलामती। जहां तक मेरा अध्ययन है, नर्मी, आवेशों पर नियंत्रण और सहनशीलता का अगर कोई बेहतरीन नमूना हैं तो मुहम्मद स० ही हैं।

यों तो सभी सदाचारी पुरुष और सुधारकगण उच्चगुणों से सुसज्जित होते हैं लेकिन मानव इतिहास में मुहम्मद स० जैसा बहुगुण सम्पन्न व्यक्तित्व कहीं नहीं मिलता। इसका ऐलान मैं अपने दिल की गहराइयों से करता हूं।

आप स० अरब का शासक होते हुए भी अपना काम स्वंय कर लेते थे। अपने जूते आप स० स्वयं गांठते थे। अपने कपड़ों का पेवन्द अपने कर कमलों से खुद लगाते थे। पशुओं को अपने हाथों से चारा देते थे और अपने हाथों से दूध दोहते थे।

दूध पान करने वाले और दूध ही में नहाने वाले शासकों को तो दुनिया जानती है, लेकिन दूध दोहने वाले एकमात्र शासक आप स० हैं।

दक्षिणी भारत का एक क़िस्सा है। एक ऋषि ने वाइगई नदी की मिट्टी ढोई। और उन्होंने यह कार्य मज़दूरी के लिए किया था, लेकिन जब इस बात का पता राजा को लगा तो जिस व्यक्ति ने ऋषि के सिर पर मिट्टी रखवाई थी, उस व्यक्ति को राजा ने कठोर दंड दिया।

लेकिन हम देखते हैं कि मदीना की मस्जिद के निर्माण के लिए काम करने वालों में हज़रत मुहम्मद स० भी शरीक रहे। यह इतिहास की अनोखी मिसाल है।

आप सल्ल० का बिस्तर सादा ही था। चटाई या चमड़े पर आप लेटते थे और कभी तो ज़मीन पर ही आप स० आराम करते थे।

आप स० का मकान भी कच्ची मिट्टी का बना हुआ था। खजूर के पत्ते उसकी छत थे। आप स० दुनिया को त्याग देने वाले सन्यासी नहीं थे, बल्कि समय के शक्तिशाली शासक थे, फिर भी आप स० की यह सादगी और यह नम्रता इस कल्पना ही से दिल की अजीब दशा होती है।

हमेशा हसमुख चेहरा लिए हुएं-न झुंझलाने वाले, न गुस्सा करने वाले, न कहकहा लगाने वाले। हर व्यक्ति के काम आने वाले, प्रतिष्ठित चाल चलने वाले, किसी के सलाम की प्रतीक्षा किए बिना हर व्यक्ति को आगे बढ़कर सलाम करने वाले। बड़ों को उनके आदर ही में नहीं, बल्कि छोटों को भी स्नेह से सलाम में पहल करने वाले।

कोई पुकारने वाला चाहे वह गिरा हुआ, कुचला हुआ, पीसा हुआ और दुनिया वालों की निगाह में तुच्छ ही क्यों न हो, उसकी पुकार पर गर्मजोशी, तत्परता और दया-भाव के साथ उसकी मदद को दौड़ने वाले। यह है महान और उच्चाचरण इस पाक नबी का।

आप स० ने ज़िन्दगी भर न किसी को झिड़का, न किसी को धिक्कारा, न किसी को गाली दी।

बहुत सारे महापुरुषों का हाल हम जानते हैं कि वे बाहर दूसरों के लिए तो नम्र स्वभाव होंगे, धैर्यवान और संयमी नज़र आयेंगे, लेकिन अपने बाल-बच्चों में, अपने नौकर-चाकर और अपने अधीनों के बीच वे सख़्ती करने वाले, डांटने-डपटने वाले और कटु वाक्य होते हैं।

लेकिन प्यारे नबी की तो शान ही निराली है। जिस तरह वे दूसरों के बीच रहते थे वैसे ही मृदुल स्वभाव और सुशील अपने बालबच्चों, नौकर-चाकर और अधीनों के बीच में भी थे।

आप स० से मिलने वाले जब हाथ मिलाने के लिए हाथ बढ़ाते तो

उनका हाथ थामकर आप स० बातचीत करते। आने वाला जब तक अपना हाथ नहीं खींच लेता आप स० उसकी तरफ हाथ बढ़ाये रखते। साथियों के साथ चलते तो उनके हाथों में हाथ मिलाए हुए चलते। हर एक को प्रेम और आदर के साथ पुकारते। कोई आप स० से सख़्त शब्दों में बात करता तो आप स० धैर्य से काम लेते। आप स० लज्जा की प्रतिमूर्ति थे। शरीफ़ ख़ानदान की पाकदामन कुमारियों से बढ़कर आप स० लज्जावान थे।

ऐसे महान पुरुष को जिन सौभाग्यशालियों ने अपना रहनुमा बनाया है उन्हीं का नाम मुसलमान है। आप स० के अनुयायियों में आज भी इन गुणों की छाप पाई जाती है। यह सब इस महान नबी ही के कारण है।

आप सल्ल० की नम्रता आप सल्ल० की दृढ़ता

बहुत सारे धार्मिक गुरुओं के जीवन में हम ऐसे क्षण भी पाते हैं कि जब वे अल्लाह की मदद से निराश नज़र आते हैं। ये सभी लोग सदाचारी थे, लेकिन कठिन स्थितियों में कभी-कभी उनके मुख से ऐसे शब्द निकल जाते थे मानो खुदा ने उनका साथ छोड़ दिया है।

इन लोगों के जीवन में नर्मी तो नज़र आती है, लेकिन इसी के साथ कठिन हालात में अपने उसूलों पर जमाव और वह मज़बूती नज़र नहीं आती जो अभीष्ट है।

अरबी नबी की शान देखिये, वे बातचीत में जितने नर्म थे, जद्दोजहद के मैदान में उतने ही गर्म थे, मुसीबतों और मुश्किलों में पहाड़ की तरह अटल नज़र आते हैं।

आप स० की तौहीद की दावत को सुनकर गुस्से से भड़क जाने वाले

लोगों का एक प्रतिनिधि मंडल आप स० के चाचा अबू तालिब के यहां गया और उनको चेतावनी दी कि या तो वे अपने भतीजे को समझायें कि वह इस दावत से रुक जाए या वे क़ौम और मुहम्मद के बीच से हट जाएं, हम स्वयं मुहम्मद से निबट लेंगे।

स्थिति की गंभीरता से अबू तालिब चिन्तित हुए। मुहम्मद स० को बुलाया और क़ुरैश के इरादों से उन्हें अवगत कराया, फिर प्रेम भरे शब्दों में यह मशिवरा दिया कि इन हालात में आप कुछ नर्मी अपना लें। इस अवसर पर सच्चे नबी और महान पथ-प्रदर्शक का यह जवाब इन्सानी दृढ़ता और निश्चय की मज़बूती के इतिहास में एक शानदार अध्याय है:

'अगर ये लोग मेरे दाहिने हाथ में सूरज और बायें हाथ में चांद भी लाकर रख दें तब भी मैं अपनी कोशिश से नहीं रुकूंगा। मैं अपनी आख़िरी सांस तक इस दावत के पहुंचाने में कोई कमी न करूंगा।'

विरोधियों ने न जाने कितने दुख आप स० को दिए। कूड़ा करकट आप स० पर फेंका, आप पर पत्थर बरसाए। नमाज़ की हालत में तो ऊंट की ओझ तक आप स० पर डाल दी। आप स० की हत्या के लिए हर क़बीले के एक-एक व्यक्ति ने नंगी तलवार लेकर आप स० के घर का घेराव कर लिया।

इन कठिन परिस्थतियों से आप स० के अन्दर और मज़बूती पैदा होती गई। आप स० के क़दम ज़रा भी न डगमगाए।

रण क्षेत्र में आपको ललकारा गया। उस समय यही मृदुल स्वभाव इन्सान पूरी दृढ़ता के साथ आगे बढ़ता हुआ दिखाई देता है। केवल ३१३ बहादुर आप स० के साथ थे, जबकि विरोधियों की संख्या इससे कई गुना थी। डटकर आप स० ने मुक़ाबला किया और कामियाब हुए।

रण-क्षेत्र में आप स० ज़ख्मी भी हुए। आपके गाल पर गहरा ज़ख़्म भी लगा। आप स० के दो दांत भी शहीद हुए। एक गढ़े में आप स० गिर भी पड़े। फिर भी आप स० की दृढ़ता और मज़बूती में तनिक भी कमी न आई।

मदीने का घेराव हुआ। भूक, उपवास और निर्धनता का मुंह भी देखना पड़ा, लेकिन किसी भी हालत में आप स० निराश न हुए। हर हाल

में आशापूर्ण और सख़्त से सख़्त हालात में मज़बूती का पहाड़ साबित हुए।

यह तो उस महान नबी की हालत थी। आप स० के साथियों का हाल भी कुछ ऐसा ही था। ये लोग कितने अत्याचारों का शिकार हुए। उनका मज़ाक़ उड़ाया गया। उनपर फब्तियां कसी गयीं। उन पर कोड़े बरसाये गये। तपती हुई रेत पर उन्हें लिटाया गया, लेकिन इन सभी हालात में नबी के ये साथी पूरी शक्ति के साथ सत्य-मार्ग पर जमे रहे।

एकेश्वरवाद और एक ख़ुदा पर भरोसा उनकी दृढ़ता से स्पष्ट था। ये लोग आख़िरी सांस तक अपने उसूलों पर जमे रहे। जान चली गई, परन्तु ये अपने उसूलों से न हटे।

प्यारे नबी स० ने अपने अनुयायियों को जहां मृदुल स्वभाव होने की शिक्षा दी, वहीं उसूलों में बेलचक रवैया अपनाने की शिक्षा भी दी।

विरोधियों के हाथों आप स० ने और आप० स० के साथियों ने बहुत जुल्म सहे। लेकिन हम देखते हैं कि मक्का विजय होने के अवसर पर जब आप स० और आप स० के साथी मक्के में विजयी के रूप में प्रवेश कर रहे थे तो उन पर न तो इस विजय का कोई नशा छाया हुआ था और न उनके दिलों में प्रतिशोध की कोई भावना थी, बल्कि इसके विपरीत दुनिया ने देखा कि आप स० का सिर विनम्रता से झुका हुआ था और आप की दाढ़ी के बाल ऊँट के कोहान को छू रहे थे।

क़ुरैश कांप रहे थे कि हमने इन लोगों पर इतने भयानक अत्याचार किए हैं, आज हमारी गत क्या होगी?

प्यारे नबी की मुहब्बत भरी ज़ुबान से ये शब्द मोतियों की तरह झड़ रहे थे:

लोगो! आज तुमसे कोई बदला नहीं लिया जायेगा, अल्लाह तुम्हें माफ़ करे, वही दयावान और कृपाशील है। आज तुम सब स्वतन्त्र हो।'

आप स० ने अपने शहीद चचा के कलेजे को निकालने वाले और चबाने वाली दोनों को माफ़ कर दिया। क्या मानव इतिहास इसका कोई उदाहरण पेश कर सकता है।

अहा! कितनी महानता और कितनी श्रेष्ठता की बात है यह!!

पाकी और सफ़ाई

अनभिज्ञ लोगों के अन्दर इस्लाम और मुसलमानों के बारे में बहुत सी ग़लतफ़हमियां पाई जाती हैं। उनकी एक ग़लतफ़हमी यह भी है कि मुसलमानों में पाकी और सफ़ाई का कोई महत्व नहीं है। हम ऐसे सभी भाइयों से कहेंगे कि सर्वाधिक पाकी और सफ़ाई की शिक्षा देने वाला अगर कोई धर्म है तो वह केवल इस्लाम है। प्यारे नबी स० के तरीक़े के अनुसार अगर बाह्य और अन्तर की पाकी और सफ़ाई अपना ली जाए तो सम्पूर्ण जगत स्वच्छता का नमूना बन जाए।

इस्लाम में हर रोज़ पांच समय की नमाज़ फ़र्ज़ की गई है और नमाज़ स्वच्छता और सफ़ाई के बिना अदा ही नहीं होती। स्वच्छता और सफ़ाई को इस्लामी परिभाषा में 'तहारत' कहते हैं।

तहारत की तीन क़िस्में हैं—

१. जिस्म की पाकी,
२. कपड़ों की पाकी और
३. जगह की पाकी।

पेशाब-पाख़ाने के बाद जिस्म को अत्यन्त स्वच्छ रखने की शिक्षा यह धर्म देता है। पेशाब के बाद पाकी के लिए ढेले और पानी के इस्तेमाल पर ज़ोर देता है।

निम्नलिखित जगहों पर पाखाना-पेशाब करने को मना करता है:

रास्ता, तालाब और नदी के घाट, पेड़ की छाया, ईदगाह, मस्जिद, क़ब्रिस्तान और सार्वजनिक स्थल आदि।

इस सम्बन्ध में खड़े होकर पेशाब करने, पानी में पेशाब आदि करने

या सवारी पर से शौच आदि करने से भी मना किया गया है। यह रोक विशेषकर पाकी और स्वच्छता को सामने रखते हुए ही लगाई गई है।

इस्लाम में पाकी और स्वच्छता का कितना अधिक ख़्याल रखा गया है इसका अनुमान आप इस बात से भी कर सकते हैं कि इस्लाम ने आदेश दिया है कि सुअर और कुत्ता आदि अपवित्र जानवरों का लुआब आदि अगर किसी बर्तन से लग जाए तो उसे अच्छी तरह धो कर पाक करना चाहिए।

इसी तरह अगर कपड़े या बदन से खून, पीप और गन्दगी वग़ैरह लग जाए तो उसे धोकर पाक करना चाहिए। इसी तरह दूध-पीता बच्चा भी पेशाब कर दे तो पानी डालकर बदन और कपड़े को साफ़ करना ज़रूरी है।

नमाज़ की शर्तों में यह बात भी शामिल की गई कि नमाज़ अदा करने की जगह, मुसल्ला, नमाज़ पढ़ने वाले के कपड़े और उस का जिस्म भी पाक हो। नमाज़ी के लिए ज़रूरी है कि नमाज़ से पहले वह वुज़ू कर ले, और अगर नहाने की ज़रूरत हो तो नहाना भी उस के लिए ज़रूरी है।

नहाने में यह ज़रूरी है कि आदमी कुल्ली और ग़रारा भी करे और नाक में पानी डालकर उसे भी अच्छी तरह साफ़ करे और फिर पूरे शरीर पर पानी डालकर नहाए।

वुज़ू में भी कुल्ली-करते और नाक में पानी डालकर साफ़ करते हैं। मुंह और हाथ-पैर धोते हैं और यह सब काम तीन-तीन बार किया जाता है।

हाथ भिगो कर सिर, गर्दन और कानों पर फेरते हैं। इस सम्बन्ध में दातून की भी बड़ी ताकीद की गई है और उसका बड़ा फ़ायदा बताया गया है।

हर रोज़ नमाज़ के लिए पांच बार वुज़ू करना पड़ता है अब आप स्वयं समझ सकते हैं कि इस्लाम में सफ़ाई का कितना ख़्याल रखा गया है।

प्यारे नबी स० स्वयं स्वच्छता का बड़ा ख़्याल रखते थे। दांत साफ़ करने के लिए आपकी दातून सदैव आप के तकिए के नीचे होती थी। हर जगह थूकने को आप पसन्द नहीं करते थे। अगर कोई ग़लत जगह थूक

देता तो आप आगे बढ़कर स्वयं उसको साफ़ कर देते थे। आप स० अपने रहने की जगह को दर्पण की तरह साफ़ रखते थे। आप स० के वस्त्र सादा होते थे मगर पाक-साफ़।

'पाकी और स्वच्छता ईमान का अंश है'— यह नबी स० का कथन है।

इस्लाम में औरत का स्थान

इस्लाम और मुसलमानों के सम्बन्ध में जो ग़लतफ़हमियां पाई जाती हैं उनमें से कुछ ग़लतफ़हमियां औरतों के बारे में हैं।

इस्लाम से पहले आमतौर से हर समाज और हर सोसाइटी में औरत को हीन समझा जाता था। उसका अपमान किया जाता और तरह-तरह के अत्याचारों का उसे निशाना बनाया जाता था।

□ भारतीय समाज में पति के मर जाने पर पति की लाश के साथ पत्नी को भी ज़िन्दा जल जाना पड़ता था।

□ चीन में औरत के पैर में लोहे के तंग जूते पहनाए जाते थे।

□ अरब में लड़कियों को जीवित गाड़ दिया जाता था।

इतिहास गवाह है कि इन अत्याचारों के विरुद्ध आवाज़ उठाने वाले सुधारक निकटवर्ती युग में पैदा हुए हैं, लेकिन इन सभी सुधारकों से शताब्दियों पहले अरब देश में प्यारे नबी स० औरतों के हितैषी के रूप में नज़र आते हैं और औरतों पर ढाये जाने वाले अत्याचारों का ख़ात्मा कर देते हैं।

औरत के अधिकारों से अनभिज्ञ, अरब समाज में प्यारे नबी सल्ल० ने औरत को मर्द के बराबर दर्जा दिया। औरत का जायदाद और सम्पत्ति में कोई हक़ न था, आप स० ने विरासत में उसका हक़ नियत किया।

औरत के हक़ और अधिकार बताने के लिए क़ुरआन में निर्देश उतारे गये।

मां-बाप और अन्य रिश्तेदारों की जायदाद में औरतों को भी वारिस घोषित किया गया। आज सभ्यता का राग अलापने वाले कई देशों में औरत को न जायदाद का हक़ है न वोट देने का। इंग्लिस्तान में औरत को वोट का अधिकार १९२८ ई० में पहली बार दिया गया। भारतीय समाज में औरत को जायदाद का हक़ पिछले दिनों में हासिल हुआ।

लेकिन हम देखते हैं कि आज से चौदह सौ वर्ष पूर्व ही ये सारे हक़ और अधिकार नबी स० ने औरतों को प्रदान किये। कितने बड़े उपकार कर्त्ता हैं आप!

आप स० की शिक्षाओं में औरतों के हक़ पर काफ़ी ज़ोर दिया गया है। आप स० ने ताकीद की कि लोग इस कर्तव्य से ग़ाफ़िल न हों और न्यायसंगत रूप से औरतों के हक़ अदा करते रहें। आप स० ने यह भी नसीहत की है कि औरत को मारा-पीटा न जाय।

औरत के साथ कैसा बर्ताव किया जाय, इस सम्बन्ध में नबी स० की बातों का अवलोकन कीजिए:

(१) अपनी पत्नी को मारने वाला अच्छ आचरण का नहीं है।

(२) तुममें से सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति वह है जो अपनी पत्नी से अच्छा सुलूक करे।

(३) औरतों के साथ अच्छे तरीक़े से पेश आने का खुदा हुक्म देता है, क्योंकि वे तुम्हारी मां, बहिन और बेटियां हैं।

(४) मां के क़दमों के नीचे जन्नत है।

(५) कोई मुसलमान अपनी पत्नी से नफ़रत न करे। अगर उसकी कोई एक आदत बुरी है तो उसकी दूसरी अच्छी आदत को देखकर मर्द को खुश होना चाहिए।

(६) अपनी पत्नी के साथ दासी जैसा व्यवहार न करो। उस को मारो भी मत।

(७) जब तुम खाओ तो अपनी पत्नी को भी खिलाओ। जब तुम

पहनो तो अपनी पत्नी को भी पहनाओ।

(८) पत्नी को ताने मत दो। चेहरे पर न मारो। उसका दिल न दुखाओ। उसको छोड़कर न चले जाओ।

(९) पत्नी अपने पति के स्थान पर समस्त अधिकारों की मालिक है।

(१०) अपनी पत्नियों के साथ जो अच्छी तरह बर्ताव करेंगे, वही तुम में सबसे बेहतर हैं।

इतने अधिकार प्रदान करके औरत को बिल्कुल आज़ाद भी नहीं छोड़ा, बल्कि उसे कुछ बातों का पाबन्द भी किया:

१— औरत इस तरह रहे कि जब उसका पति उसे देखे तो खुश हो जाय। जब कोई हुक्म दे तो उसे पूरा करे। पति अगर दूर हो तो उसकी सम्पत्ति और अपने सतीत्व की सुरक्षा करे। ऐसी ही स्त्री आदर्श पत्नी समझी जायेगी।

२— सुशीला पत्नी का मिल जाना अमूल्य पूंजी के बराबर है।

३— जो पांचों समय की रोज़ाना नमाज़ पढ़े, रमज़ान के रोज़े रखे और अपने पति का कहा माने तथा अपने सतीत्व की सुरक्षा करे, ऐसी औरत जिस रास्ते से चाहे जन्नत में प्रवेश करे।

४— दुनिया की सारी दौलत से ज़्यादा क़ीमती चीज़ पाक दामन बीवी है।

इस तरह प्यारे नबी स० ने औरतों को अधिकार भी दिये और उन्हें उनके कर्त्तव्यों से भी बाख़बर किया।

किसी को आपत्ति हो सकती है कि औरतों को इतने सारे अधिकार प्रदान करने वाले इस्लाम में बहुपत्नीवाद की अनुमति क्यों है? क्या यह औरतों पर खुला ज़ुल्म नहीं है।

इस सिलसिले में हमें इतिहास, पुरुष के स्वभाव और ज़िन्दगी के व्यावहारिक मसलों को सामने रखना होगा।

हिन्दुस्तान के राजा दशरथ के कई पत्नियां थीं। इसी तरह कृष्ण जी को भी हम रुक्मिणी, सत्यबा और राधा के अलावा असंख्य गोपियों के

बीच देखते हैं।

बल्ली औरतों के साथ मरगन जैसे देवता को हम ऐश करते हुए पाते हैं।

यह तो थी प्राचीन काल और पुराणों की बात, अब ऐतिहासिक घटनाओं को लीजिए।

बड़े-बड़े राजाओं के यहां एक से अधिक पत्नियां होती थीं।

तमिलनाडु के कट्टा बम्मन के घर कई पत्नियां थीं।

आज भी कुछ राजनैतिक नेता कई पत्नियां रखते हैं।

इस्लाम से पहले अरब में पत्नियों की संख्या पर कोई हदबन्दी नहीं थी। प्यारे नबी ने मर्द के स्वभाव और अमली ज़रूरतों का ध्यान रख कर इस असीम संख्या को चार तक सीमित रखा।

इस्लाम से पहले अरब दुनिया में शादी विवाह का कोई विशेष नियम और सिद्धान्त न था। गिरोहों और कबीलों के बीच पत्नियां और दासियां रखने का रिवाज आम था, इसी तरह तलाक़ पर भी कोई पाबन्दी नहीं थी जिसने जब चाहा तलाक़ दे दी, इन हालात के सुधार के लिए खुदा के निर्देश आये, पत्नियों की संख्या को सीमित कर दिया गया और तलाक़ के सम्बन्ध में उचित नियमों और शिष्टाचार की पाबन्दी का हुक्म दिया गया, क़ुरआन में फरमाया गया:

'तुम्हें अगर आशंका हो कि यतीम बच्चों की परवरिश बगैर शादी किये न हो सकेगी तो अपनी पसन्द की दो, तीन या चार औरतों से तुम विवाह कर सकते हो (यह आशंका हो कि उनके साथ भी तुम न्याय न कर पाओगे तो) एक औरत या दासी ही पर बस करो, अन्याय से बचने के लिए यह आसान तरीक़ा है।' (निसा ६)

क़ुरआन की इस हिदायत में जो हिकमतें और भलाइयां हैं उन पर भी विचार कीजिए। न्याय, इंसाफ़ तथा सच्चाई के साथ पत्नी से पेश आओ। बहुस्त्रीवाद की अनुमति भी है और इसी के साथ-साथ नाइंसाफ़ी से बचने की ताकीद भी। न्याय और इन्साफ़ सम्भव न हो तो एक ही शादी पर ज़ोर दिया गया है।

मर्द को किसी भी समय अपनी काम तृष्णा की ज़रूरत पेश आ सकती है । इसलिए कि उसे कुदरत ने हर हाल में हमेशा सहवास के योग्य बनाया है जबकि औरतों का मामला इससे भिन्न है ।

माहवारी के दिनों में, गर्भावस्था में (नौ-दस माह), प्रसव के बाद के कुछ माह औरत इस योग्य नहीं होती कि उसके साथ उसका पति सम्भोग कर सके ।

सारे ही मर्दों से यह आशा रखना सही न होगा कि वे बहुत ही संयम और नियन्त्रण से काम लेंगे और जब तक उन की पत्नियां इस योग्य नहीं हो जातीं कि वे उनके पास जायें, वे काम इच्छा को नियंत्रित रखेंगे । मर्द जायज़ तरीक़े से अपनी ज़रूरत पूरी कर सके, ज़रूरी है कि इसके लिए राहें खोली जायें और ऐसी तंगी न रखी जाय कि वह हराम रास्तों पर चलने पर विवश हो । पत्नी तो उसकी एक हो, आशना औरतों की कोई क़ैद न रहे । इससे समाज में जो गन्दगी फैलेगी और जिस तरह आचरण और चरित्र ख़राब होंगे इसका अनुमान लगाना आपके लिए कुछ मुश्किल नहीं है ।

व्यभिचार और बदकारी को हराम ठहराकर बहुस्त्रीवाद की कानूनी इजाज़त देने वाला बुद्धिसंगत दीन इस्लाम है ।

एक से अधिक शादियों की मर्यादित रूप में अनुमति देकर वास्तव में इस्लाम ने मर्द और औरत की शारिरिक संरचना, उनकी मानसिक स्थितियों और व्यावहारिक आवश्यकताओं का पूरा ध्यान रखा है और इस तरह हमारी दृष्टि में इस्लाम बिल्कुल एक वैज्ञानिक धर्म साबित होता है । यह एक हक़ीक़त है, जिस पर मेरा दृढ़ और अटल विश्वास है ।

क्या इस्लाम तलवार से फैला?

यह कहना कि इस्लाम तलवार के ज़ोर से फैलाया गया है, केवल एक ग़लत दावा है जो पूर्णरूप से ग़लतफ़हमी पर आधारित है। आइये इस पहलू से भी हक़ीक़त का जायज़ा लें और सही नतीजे तक पहुंचने की कोशिश करें।

ईसाइयत और इस्लाम अपने आरम्भ काल में गुप्त प्रचार के द्वारा फैलाए गए।

हज़रत मसीह के बाद ईसाइयत का प्रचार उनके अनुयायियों ने किया।

लेकिन इस्लाम का प्रचार कुछ ही दिनों तक गुप्त रूप में हुआ, फिर खुल्लम-खुल्ला उसके प्रचार का हुक्म आ गया।

इस्लाम में ज़ोर-ज़बर्दस्ती की कोई गुंजाइश नहीं, स्पष्ट रूप से इसका ऐलान किया गया है। अतः फ़रमाया गया, 'दीन के मामले में कोई ज़ोर-ज़बर्दस्ती नहीं।' कोई कह सकता है कि अगर ऐसी ही बात है तो नबी स० ने लड़ाइयां क्यों लड़ीं और आपको तलवार क्यों उठानी पड़ी? हक़ीक़त यह है कि आप स० ने जो लड़ाइयां लड़ी हैं, उन्हें आक्रामक लड़ाई नहीं कह सकते। आप स० ने जो लड़ाइयाँ लड़ीं वे सुरक्षा के लिए लड़नी पड़ीं।

मक्कावासी मदीने के इस्लामी राज्य को नष्ट कर देने की योजना बना कर निकले थे। यह मदीना वही है, जिसने ख़ुदा के नबी को पनाह दी थी। इस्लाम की जीवन-प्रणाली को ख़त्म कर देने के लिए क़ुरैश ने जब हिंसात्मक कार्यवाही की तो नबी स० को उनसे संघर्ष करना पड़ा।

इतिहास के बाद के युग में मुस्लिम शासकों ने जो लड़ाइयां लड़ी हैं, उनका इस्लाम से कोई सम्बन्ध नहीं है।

हिन्दू राजा रामचन्द्र ने जो जावा और सुमात्रा पर फौजकशी की, वहां आज भी हिन्दू-संस्कृति का असर पाया जाता है, लेकिन इससे यह नतीजा निकलना सही न होगा कि राजा रामचन्द्र ने हिन्दू धर्म के फैलाने के लिए फौजकशी की थी।

यूरोप के ईसाइयों ने फौजकशी की और पूर्वी देशों में अपना साम्राज्य स्थापित किया। इस साम्राज्य में ईसाइयत का प्रचार हुआ, लेकिन क्या आप यह कह सकते हैं कि इन देशों में ईसाइयत तलवार के ज़ोर से फैली है! फौजकशी तो आम तौर से मुल्कगीरी के लिए होती है, फिर जिस देश में जिन लोगों का राज्य स्थापित हो जाता है, उन शासकों की नकल वहां की जनता करने लगती है और उनके धर्मों को अपनाने लगती है।

हिन्दुओं का एक पन्थ समनर पन्थ है। इस पंथ के लोगों का शासन जब तमिलनाडु में हुआ तो यहां समनर पंथ को उन्नति प्राप्त हुई। हिन्दुस्तान में जब बुद्ध शासक थे तो बुद्धमत को उन्नति मिली। इसी तरह जब शिवपंथी हिन्दू शासक हुए तो इस पंथ को लोकख्याति प्राप्त हुई और जब विष्णु पंथ के लोग सत्ता में आए तो इस पंथ को लोकप्रियता हासिल हुई। इससे यही मालूम होता है कि 'जैसा राजा वैसी प्रजा' की बात ही थी वरना धर्म के फैलाव से इन शासकों को न दिलचस्पी थी न इस काम के लिए शासकों ने कभी लड़ाई ही लड़ी।

इतिहास में हमें कोई ऐसी घटना नहीं मिलती कि अगर किसी ने इस्लाम कुबूल करने से इन्कार किया तो उसे केवल इस्लाम कुबूल न करने के जुर्म में कत्ल कर दिया गया हो, लेकिन कैथोलिक और प्रोटेस्टैंट के बीच संघर्ष में धर्म की बुनियाद पर बड़े पैमाने पर खून खराबा हुआ। दुर क्यों जाइये, तमिलनाडु के इतिहास ही को देखिए, मदुरै में ज्ञान समुन्द्र के काल में आठ हज़ार समनर मत के अनुयायियों को सूली दी गई, यह हमारा इतिहास है।

अरब में प्यारे नबी शासक थे तो वहां यहूदी भी आबाद थे और ईसाई भी, लेकिन आप स० ने उन पर कोई ज़्यादती नहीं की।

हिन्दुस्तान में मुस्लिम शासकों के ज़माने में हिन्दू धर्म को अपनाने और उस पर चलने की पूर्ण अनुमति थी। इतिहास गवाह है कि इन शासकों ने मन्दिरों की रक्षा और उनकी देखभाल की है।

मुस्लिम फ़ौजकशी अगर इस्लाम को फैलाने के लिए होती तो दिल्ली के मुस्लिम सुल्तान के खिलाफ़ मुसलमान बाबर हरगिज़ फौजकशी न करता। मुल्कगिरी उस समय की सर्वमान्य राजनीति थी। मुल्कगीरी का कोई सम्बन्ध धर्म के प्रचार से नहीं होता। बहुत सारे मुस्लिम उलमा और सूफ़ी इस्लाम के प्रचार के लिए हिन्दुस्तान आए हैं और उन्होंने अपने तौर पर इस्लाम के प्रचार का काम यहां अन्जाम दिया, उनका मुस्लिम शासकों से कोई सम्बन्ध न था, इस के सबूत में नागोर में दफ़्न हज़रत शाहुल हमीद, अजमेर के शाह मुईनुद्दीन चिश्ती वग़ैरह को पेश किया जा सकता है।

इस्लाम अपने उसूलों और अपनी नैतिक शिक्षाओं की दृष्टि से अपने अन्दर बड़ी कशिश रखता है, यही वजह है कि इन्सानों के दिल उसकी तरफ स्वतः खिंचे चले आते हैं। फिर ऐसे दीन को अपने प्रचार के लिए तलवार उठाने की आवश्यकता ही कहां शेष रहती है?

(नोटः इस विषय में और अधिक जानकारी के लिए पृष्ठ ७५ भी देख लें।)

कम्युनिज़्म से उत्तम और श्रेष्ठ है इस्लाम

पूंजीवाद की रीढ़ की हड्डी को तोड़ने वाली विचारधारायें दो हैं, एक कम्युनिज़्म और दूसरी इस्लाम।

यहां के कम्युनिस्टों में कुछ ही ने 'दास कैपिटल' का गहरा अध्ययन किया होगा। मार्क्स की एक थ्योरी है, जिसका नाम है 'अतिरिक्त-मूल्य' (Surplous Value)। इसी सिद्धान्त की व्याख्या मार्क्स ने किताब के तीन बृहद् खण्डों में लिखी है।

कम्युनिज़्म का दावा है कि पूंज़ीपति अपनी पूंजी लगाता है, मज़दूर अपनी मेहनत से उस पूंजी में लाभ पैदा करता है। यंह जो लाभ है, जो असल पूंजी से ज़्यादा होता है, इस ज़ायद आमदनी से पूंजीपति एक और कारखाना लगाता है और जनता का शोषण करता है। इस दावे के बाद कम्युनिज़्म आगे बढ़ता है और पूंजीवाद की असल शक्ति अर्थात इस 'अतिरिक्त मूल्य' को ख़त्म करने का निश्चय करता है। वह पूंजीवाद को मिटाकर पैदावार के सभी साधनों का राष्ट्रीयकरण कर लेता है।

सोचने की बात यह है कि उद्योगों का राष्ट्रीयकरण करना क्या मसले का हल हो सकता है? राष्ट्रीयकरण किए हुए उद्योग में भी 'अतिरिक्त मूल्य' या 'लाभ' सामने आएगा। सवाल यह है कि इस लाभ को कहां ले जाया जाए? और यह भी देखना चाहिए कि आज व्यवहारतः इस लाभ का क्या हो रहा है?

होता यह है कि पहले उद्योगों का राष्ट्रीयकरण किया जाता है । पैदा होने वाले लाभ से मज़दूरों को कुछ हिस्सा दिया जाता है, बाक़ी जनता के लिए कुछ भी नहीं ।

किसी उद्योग के लाभ में से केवल उसमें काम करने वाले मज़दूरों ही को हिस्सा मिलता है, अन्य कारखानों में काम करने वाले मज़दूरों या देश की ग़रीब जनता का उसमें कोई हिस्सा नहीं होता । राष्ट्रीयकरण का यह मतलब नहीं होना चाहिए था, बल्कि लाभ राष्ट्र के सभी लोगों में विभाजित होना चाहिए ।

कम्युनिस्ट हुकूमत क़ानून के बल से लाभ को छीनकर दूसरों को दे देती है । इसके विपरीत इस्लाम में अतिरिक्त मूल्य या लाभ को दूसरों पर ख़र्च करने पर उभारा जाता है और इसकी ताकीद की जाती है । इस अमल के पीछे असल प्रेरक हुकूमत का दबाव नहीं, बल्कि अक़ीदे की ताक़त होती है ।

कम्युनिस्ट देशों में उद्योग ही का राष्ट्रीयकरण होता है । लाभ के विभाजन की जो भी व्यवस्था होती है, इन्हीं में होती है, रही वह जायदाद जो लोगों के क़ब्ज़े में होती है, उससे प्राप्त होने वाले लाभ के वितरण की कोई कल्पना तक नहीं है और न व्यवहारतः इसकी कोई व्यवस्था ही रखी गई है, जबकि इस्लाम लोगों की आमदनी की अतिरिक्त पूंजी को भी दूसरों पर ख़र्च करने की ताकीद करता है । इस अतिरिक्त पूंजी ही के हिस्से को जन-कल्याण के लिए निकालने और खर्च करने को 'ज़कात' का नाम देता है

अरबी भाषा में 'ज़कात' के मायने हैं, 'शुद्धिकरण' और 'पवित्रता' । अपनी आमदनी में से एक हिस्से को निकालना ज़कात है अर्थात ज़कात देकर आदमी अपने माल को पवित्रता प्रदान करता है । ऐसा न किया जाए तो सारे का सारा माल अपवित्र हो जाता है । ऐसी उत्तम शिक्षा दुनिया में केवल इस्लाम ने दी है ।

यहां कोई यह सवाल उठा सकता है कि अपने माल में से भलाई के लिए ख़र्च करने की शिक्षा तो धर्म की एक सिफ़ारिश है, कोई मालदार अगर धोखा देना चाहे तो आख़िर धोखा देने से उसे कैसे रोका जाएगा?

इस सवाल का जवाब हमें इतिहास में मिलता है। ज़कात न देने वालों के ख़िलाफ़ इस्लाम के सर्वप्रथम ख़लीफ़ा हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने तलवार उठाई थी, हालांकि ये ज़कात का इन्कार करने वाले बज़ाहिर मुसलमान और इस्लाम के अनुयायी थे। इस्लाम धर्म के मानने वालों और नबी सल्ल० पर ईमान रखने वालों तथा नमाज़ के पाबन्द लोगों के विरुद्ध यह तलवार उठी थी। जिस अपराध के ये लोग अपराधी थे, वह एक संगीन अपराध था। अल्लाह पर ईमान के बाद जिस पहलू पर इस्लाम बहुत ज़्यादा ज़ोर देता है, वह है ज़कात अर्थात अपने माल से एक हिस्सा निकाल कर अपने कमज़ोर भाइयों की मदद करना। यहाँ यह बात ध्यान में रहे कि लोग अपनी निजी आमदनी और अपनी निजी पूँजी में से दूसरों पर ख़र्च करें, इस की शिक्षा कम्युनिज़्म नहीं देता। लेकिन इस्लाम है कि इसकी ताकीद करता है कि इस प्रकार का ख़र्च अवश्य किया जाए। और अगर ऐसा ख़र्च कोई न करे, चाहे वह मुसलमान ही क्यों न हो, इस्लाम की तलवार उसके विरुद्ध उठ जाएगी।

इस्लाम कम्युनिज़्म से उत्तम और श्रेष्ठ है।

आम तौर पर पूँजीपति के मन में यह बात होती है कि उस की पूँजी उसके आराम और राहत के लिए है, उसे दूसरों पर ख़र्च करना अपने लिए निर्धनता को बुलावा देना है। यही आशंका आम तौर से लोगों को सताती है।

इस्लाम सबसे पहले इस आशंका को जड़ से उखाड़ फेंकता है। क़ुरआन खुल्लमखुल्ला कहता है कि ख़र्च करने से निर्धनता नहीं, संपन्नता आती है।

'शैतान तुम्हें निर्धनता से डराता है, और, शर्मनाक नीति (कंजूसी) अपनाने की प्रेरणा देता है, मगर अल्लाह तुम्हें अपनी और कृपा की उम्मीद दिलाता है। अल्लाह बहुत ही समाई वाला और जानने वाला है।'
(बक़रः :२६८)

कंजूसी क्या है? अपनी आवश्यकताओं पर, अपने बाल-बच्चों की ज़रूरतों पर और अन्य लोगों की आवश्यकताओं पर ख़र्च करने के बजाय पैसे को जोड़-जोड़ कर रखते रहना।

तमिल फ़िल्मी जगत में एक मशहूर गायक थे। वे बड़े कंजूस थे। उनके बेटे के पैर में जख़्म हुआ तो उसके इलाज पर खर्च करने से भी वे कतराते रहे। नतीजा यह हुआ कि उनका लड़का चल बसा। यह है कंजूसी का नतीजा। इस तरह की कंजूसी और तंगी का इस्लाम सख़्ती से विरोध करता है।

इस्लाम ने केवल ख़र्च करने की शिक्षा ही नहीं दी है, बल्कि इसके साथ-साथ ख़र्च के शिष्ट तरीक़े भी सिखाये हैं। कुछ लोग ख़र्च तो करते हैं, लेकिन उनका उद्देश्य उपकार जताना या शोहरत हासिल करना होता है। यह और इस तरह के अन्य प्रेरकों को इस्लाम नाजायज़ ठहराता है और इन्हें ख़त्म करता है। वह कहता है कि ख़र्च एक धार्मिक कर्त्तव्य है और नमाज़ के बाद इस्लाम का दूसरा बड़ा स्तंभ है। अल्लाह की प्रसन्नता के सिवा तुम्हारे ख़र्च करने का कोई और उद्देश्य नहीं होना चाहिए, यही क़ुरआन की ताकीद है।

मैंने कुछ शहरों में देखा कि किसी व्यक्ति ने एक संस्था को ट्यूब लाइट दान की और उस पर देने वाले का नाम इतने भोंडे तरीक़े से लिखा गया कि रोशनी बाहर न आ सकी। इस्लाम कहता है कि इस तरह का ख़र्च और इस तरह का दान न सिर्फ़ ग़लत है, बल्कि सारी नेकियों को बर्बाद कर देने वाला है। कुछ लोग दूसरों की आर्थिक सहायता या अन्य मदद तो करते हैं मगर अपने उपकार का दबाव मदद लेने वाले पर इतना

डालते हैं कि उसका दिल आहत हो कर रह जाता है। ऐसी सारी हरकतों को इस्लाम हराम कहता है। कुरआन में है—

'एक मीठा बोल और (किसी अप्रिय बात पर) क्षमा कर देना उस ख़ैरात से उत्तम है जिसके पीछे कष्टदायक बात हो।'(बकर : :२६३)

बिनोबा भावे जब भूदान आंदोलन चला रहे थे तो कुछ लोग अच्छी ज़मीन दान करने वाले भी थे, मगर बहुत से लोग बंजर और पथरीली ज़मीन ही दान कर रहे थे।

अपने घर के फटे-पुराने कपड़े, बासी खाना, टूटे-फूटे सामान दूसरों को देने वाले 'दाता' भी दुनिया में पाए जाते हैं। फटे नोट और खोटे सिक्के दान करने वाले दुनिया में मिल जायेंगे, लेकिन इस्लाम अपने पास की बेहतरीन चीज़ को दान में देने की शिक्षा देता है। अपने पसन्द के लिबास, अपने प्रिय खाने, अपनी मनचाही दौलत इन सबको अल्लाह की राह में ख़र्च करने की ताकीद करता है। आप की कमाई में जो अति उत्तम चीज़ें हैं उन्हें आप खुदा की राह में ख़र्च करें, यह है इस्लाम की शिक्षा। कुरआन में है—

'हे लोगो! जो ईमान लाए हो, जो माल तुमने कमाए हैं और जो कुछ हमने ज़मीन से तुम्हारे लिए निकाला है, उसमें से उत्तम भाग खुदा की राह में खर्च करो। ऐसा न हो कि उसकी राह में देने के लिये बुरी चीज़ें छाँटने की कोशिश करने लगो।' (बकर :: २६७)

आप दूसरों को खाना, कपड़ा या आर्थिक सहायता जो भी देते हैं, इस्लाम उसे छिपाकर देने को श्रेष्ठ बताता है। यद्यपि आवश्यकता पड़ने पर ऐलानिया भी मदद की जा सकती है। कुरआन में है—

'अगर तुम अपनी ख़ैरात ज़ाहिर करके दो तो यह भी अच्छा है,

लेकिन छिपाकर ज़रूरतमंदों को दो तो यह तुम्हारे हक़ में ज़्यादा बेहतर है।' (बक़र : :२७१)

दान और ख़र्च के संबंध में एक स्थिति यह भी है कि एक फ़िज़ूलख़र्च और शराबी आपके पास मदद के लिए आता है। क्या आप उसकी मदद करेंगे? अगर मदद करेंगे तो यह मदद किस प्रकार की होगी? इस्लाम ने इन सवालों का भी जवाब दिया है। कार्य-भ्रष्ट और बुद्धिहीन के हाथों में रक़म न दी जाए, यह इस्लाम की शिक्षा है। फिर भी उनके खाने, कपड़े का प्रबन्ध किया जाए। कुरआन में है—

'और अपने वे माल जिन्हें अल्लाह ने तुम्हारे लिए जीवन बाक़ी रखने का साधन बनाया है, नादान लोगों के हवाले न करो। हां, उन्हें खाने और पीने के लिए दो और उन्हें नेक हिदायत करो।' (४ : ५)

उनकी बुनियादी ज़रूरतों यानी खाने कपड़ों की फ़िक्र के बाद इस्लाम इस सिलसिले में जो निर्देश देता है, आइये उस पर एक हल्की सी नज़र डालेः

१. तुम्हारे और तुम्हारे बाल-बच्चों पर ख़र्च करने से जो बच रहे, उसमें से ख़ुदा की राह में ख़र्च करो।

२. अपनी सामर्थ्य से बढ़कर ख़र्च न करो और न ही कंजूसी से काम लो। तुम्हारी नीति संतुलित हो।

३. ऐसा न करो कि ख़र्च से अपना हाथ बिल्कुल ही रोक लो और न हाथ को इतना खुला रखो कि स्वयं मदद के योग्य हो जाओ।

४. तुम्हारे अपने निर्धन रिश्तेदार, मुहताज, दरिद्र, यतीम और मुसाफ़िर ये तुम्हारी मदद के अधिकारी हैं।

अपने माल की ज़कात देना मुसलमान पर फ़र्ज़ है । इस फ़र्ज़ की अदायगी से ग़फ़लत और लापरवाही बरतने वालों के लिए सख़्त चेतावनी दी गई है । एक बार प्यारे नबी सल्ल० ने एक औरत के पास सोने के कंगन देखे । आप सल्ल० ने पूछा, क्या तुम इसकी ज़कात देती हो? महिला ने कहा, 'नहीं!' तो नबी सल्ल० ने कहा कि आख़िरत में तुम्हें आग के कंगन पहनाए जायेंगे । (महिला ने वे कंगन दान कर दिये ।)'

ज़कात की रक़म किन लोगों पर ख़र्च की जा सकती है । क़ुरआन में इसे स्पष्ट कर दिया गया है । ग़रीबों, मुहताजों, क़र्ज़-दारों, यतीमों और मुसाफ़िरों की मदद के अलावा ज़कात की रक़म दिल रखने के लिए भी ख़र्च की जा सकती है । इसी तरह ग़ुलामों को आज़ाद करने के लिए भी ज़कात की मद से ख़र्च कर सकते हैं । ऐसे ही क़ैदियों को क़ैद से आज़ादी दिलाने के लिए, ज़कात के पैसे काम में लाए जा सकते हैं । इसके अलावा जो लोग ज़कात की वसूली आदि पर नियुक्त होंगे, उनका वेतन भी ज़कात से अदा किया जा सकता है । ज़कात ख़र्च करने की जगहों में एक 'अल्लाह की राह' भी है । अल्लाह की राह अपने मायने और मतलब के लिहाज़ से बहुत व्यापक परिभाषा है । भलाई के सारे काम अल्लाह की राह के अंतर्गत आते हैं । विशेष रूप से दीन का प्रचार और उसका बोलबाला करने का प्रयत्न आदि अल्लाह की राह ही के अन्तर्गत आते हैं ।

माँ-बाप और औलाद आदि जिनकी ज़िम्मेदारी आदमी के ऊपर होती है, इन पर ज़कात की रक़म ख़र्च नहीं की जा सकती । माल का यह हिस्सा तो दूसरों के लिए ही निकालने का आदेश दिया गया है ।

अब इस्लामी शिक्षाओं के एक अन्य पहलू को लीजिए । जितना संभव हो सके मांगने और हाथ फैलाने से बचने की इस्लाम ने ताकीद की है । आदमी को कोशिश इस बात की करनी चाहिए कि वह देने वाला बने न कि लेने वाला । किसी के आगे हाथ फैलाने से बेहतर है कि आदमी लकड़ी काटे और उससे अपना गुज़ारा करे, यह नबी सल्ल० का कथन है ।

एक बार एक देहाती को प्यारे नबी सल्ल० ने बुलाया और उसके हाथों को चूम लिया। उसके हाथ पर मेहनत और परिश्रम के निशान थे। वह अपना गुज़र-बसर करने के लिए मेहनत मज़दूरी करता था, इसीलिए खुश होकर आप सल्ल० ने उसके हाथों को चूम लिया।

एक तरफ़ इस्लाम ने सवाल करने और मांगने से रोका है तो दूसरी तरफ़ खुशदिली के साथ दूसरों पर अपने माल ख़र्च करने का हुक्म दिया है। इससे अन्दाज़ा होता है कि इस्लाम की शिक्षा में अत्यन्त सौंदर्य और संतुलन पाया जाता है।

कुछ स्पष्टीकरण

'इस्लाम जिससे मुझे प्यार है'। पढ़कर कुछ सज्जनों ने मिस्टर अडियार से इस्लाम के बारे में कुछ प्रश्न किये और कुछ आपत्तियां। हम यहां वे प्रश्न और आपत्तियां और उनके उत्तर पाठकों की दिलचस्पी के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं।

मुस्लिम देशों के आपसी झगड़े और इस्लाम

एक ग़ैर-मुस्लिम भाई ने सवाल किया कि आज हम देखते हैं कि मुस्लिम देश आपस में गुथ्थम-गुथ्था हैं। हालांकि वे सब इस्लाम के मानने वाले हैं। फिर इस्लाम से प्यार होने का क्या मतलब है? इस सवाल का जवाब देते हुए मिस्टर अडियार ने कहा कि—

'जहां तक मैं समझता हूँ प्यार तो प्यार है। मुसलमान क्या करते हैं? इसका इससे कोई सम्बन्ध नहीं है। मुसलमानों की कोताहियों और कमियों को देखकर मैं इस्लाम की प्रशंसा करने से नहीं रुक सकता।' इस

पर एक सज्जन बोले:

'अरब देशों के एक-दूसरे से युद्ध करने से क्या इस्लाम पर से यक़ीन नहीं उठ जाता?'

मिस्टर अडियार ने कहा:

'बज़ाहिर इस सवाल में वज़न महसूस होता है, लेकिन हकीक़त कुछ और है। यक़ीन उठ जाने के लिए कोई मज़बूत और ठोस बुनियाद चाहिए। हम देखते हैं कि चीन और वियतनाम दोनों ही कम्युनिस्ट देश ल.ल झण्डों के अलमबरदार हैं, फिर भी दोनों में लड़ाई हुई। क्या भारत के कम्युनिस्ट यह कहते हैं कि कम्युनिज़्म पर से हमारा यक़ीन उठ गया है। ऐसा वे बिल्कुल नहीं कहेंगे। इसी तरह हम देखते हैं कि हिटलर और चर्चिल दोनों ईसाई थे। दोनों के नेतृत्व में जर्मनी और इंगलिस्तान में घमासान का युद्ध हुआ। क्या इस युद्ध ने ईसाइयों के दिल से उनका ईमान और यक़ीन छीन लिया और उन्होंने ईसाइयत से मुंह मोड़ लिया? —बिल्कुल नहीं—फिर देखिए, भारत के विभिन्न मन्दिरों में बार-बार झगड़े हुए तो क्या इससे मन्दिरों के पुजारी ईश्वर से बेज़ार होकर नास्तिक और अनीश्वरवादी हो गए?—हरगिज़ नहीं।

अगर ये बातें सही हैं तो मुस्लिम देशों के केवल आपस में टकराने के कारण इस्लाम से बे-इत्मीनानी का सवाल कहाँ से पैदा होता है?

ये तो विभिन्न देशों के झगड़े हैं, जिस का अक़ीदे और धर्म से कोई सम्बन्ध नहीं। ये झगड़े आज हैं तो कल समाप्त भी हो सकते हैं। लेकिन अक़ीदा और यक़ीन आज भी बाक़ी हैं और कल भी बाक़ी रहेगा। यह बदलने और डांवाडोल होने वाली चीज़ नहीं है।

आज दुनिया में कम्युनिज़्म एक शक्ति की हैसियत रखता है और उसके मुक़ाबले में पूंजीवाद एक दूसरी शक्ति है। तीसरी शक्ति अगर दुनिया में कोई है तो वह शक्ति इस्लाम की है।

उपर्युक्त पहली दोनों शक्तियां अन्ततः तीसरी शक्ति के आगे नत-मस्तक होंगी। इतिहास का अध्ययन यही बताता है। भूतकाल का इतिहास भी, वर्तमान काल का इतिहास भी और भविष्य का इतिहास भी, सभी इसकी ओर संकेत करते हैं।

ये सभी इस्लामी देश अत्यन्त निर्धन थे । लेकिन 'अरब के मरुस्थल से दुनिया में रहमत फैलेगी ।' यह नबी सल्ल० का ऐलान था। हम देख रहे हैं कि आज वहां पत्थरों में से पेट्रोल निकल रहा है।१'

अरब अगर इस्लामी अक़ीदों पर और अधिक यक़ीन और अमल प्रकट करेंगे तो उन पर अल्लाह की कृपा दुनिया में भी बहुत ज़्यादा होगी ।

प्यारे नबी स० की ज़िन्दगी बे-दाग़ थी । इसी तरह ख़लीफ़ाओं की ज़िन्दगी भी । इतिहास के बाद के ज़मानों में कुछ नवाबों और बादशाहों के क़दम फिसले हैं, कुछ ग़लतियां उनसे हुई हैं लेकिन मुस्लिम उम्मत का दीन और अपने उसूलों पर अटल विश्वास रहा है । आरम्भकाल में उनकी संख्या लाखों में थी तो आज यह संख्या करोड़ों तक पहुंच गई है । इससे स्पष्ट है कि मुसलमानों और मस्लिम देशों की कोताहियों और ग़लतियों से अक़ीदे के डावांडोल होने का सवाल ही पैदा नहीं होता । लोगों की ग़लतियों से उसूल ग़लत नहीं हो जाते ।

हक़ीक़त यह है कि दुनिया की गम्भीर समस्याओं का हल और दुनिया की मुसीबतों का इलाज इस्लाम ही है । सूरज अगर मन्द पड़ जाये तो रोशनी कहां से आयेगी? समुन्दर अगर नमकीनी खो दें तो नमक कहाँ से आयेगा? स्रोत सूख जाये तो पानी की धारा कहाँ सें आयेगी? इस्लाम अगर पराजित हो जायें तो दुनिया और मानव जाति कहां से अपने दुखों का इलाज पायेगी?

इस्लाम की सज़ाएं

आमतौर से ग़ैर-मुस्लिम भाइयों में यह बात मशहूर है और इसे खूब फैलाया भी गया है कि मुसलमान निर्दयी होते हैं और उन के यहां सज़ाएं भी ज़ालिमाना दी जाती हैं । चोरों का हाथ काटा जाता है और व्यभिचार पर पत्थरों से मार डालने की सज़ा दी जाती है । यह भी कहा जाता है कि मुसलमानों ने फ़ौजकशी करके मन्दिरों को ढाया है और ज़ुल्म व सितम किया है । इन्ही सब बातों को लेकर कहा जाता है कि मुसलमान ज़ालिम और बे-रहम होते हैं ।

---

१. पट्रो एक लातीनी शब्द है जिसके मायने हैं पत्थर। पेट्रोल के मायने हैं फ़ज़्ल किया हुआ।

ये आरोप लगाने से पहले लोगों को अपना दामन भी देखना चाहिए। फिर असल हक़ीक़त खुलकर सामने आ सकती है।

□ बेटे ने बछड़े को मार डाला तो मनुस्मृति के आदेशानुसार चोलान (Cholan) ने अपने बेटे को फांसी पर लटकाया। इस काम को आख़िर क्या कहा जाएगा?

□ राजा के बाग़ से एक फल नदी में गिर कर बहता हुआ चला आया, उसको एक लड़की ने उठा कर खा लिया। नन्नन (Nunnen) नामक राजा ने इस अपराध में उस लड़की को क़त्ल की सज़ा दी।

□ मशहूर कवि कंगी के पैर के कंगन को एक सुनार ने चुराया तो उस समय के सारे ही सुनारों को क़त्ल कर दिया गया।

□ ज्ञाना समुन्दर नामक गुरु एक मठ में रहते थे। समनर नामक एक क़ौम के लोगों ने उस मठ को आग लगाने की कोशिश की इस अपराध में उस क़ौम के आठ हज़ार लोगों को सूली दी गई।

□ अय्यर नामक एक व्यक्ति को धर्म परिवर्तन करने के जुर्म में पत्थर से बांधकर समुन्दर में फेंक दिया गया। जब वह बच निकला तो उसे चूने की भट्टी में डाल दिया।

□ तनालीरामन की घटनाओं में एक घटना यह भी है कि राजा के आदेश को न मानने वालों को ज़िन्दा दफ़न किया गया और कुछ को हाथी के पैरों तले कुचला गया।

□ तमिलनाडु के तिरुमलाई और मैसूर के एक राजा के बीच जो लड़ाई हुई उसमें लोगों की नाक काट दी गई। मैसूर के शासक ने तमिलनाडु पर इंतिक़ाम लेने ही के लिए फ़ौजकशी की थी और लोगों के होंट और नाक काट डाले थे। फिर इसके जवाब में उस समय के तमिलनाडु के शासक ने मैसूर पर हमला किया और उसने अपने दुश्मनों के नाक और होंट काटे। (नायक राजाओं के इतिहास की किताबों से लिया गया।)

□ बच्चों का बलिदान करना, इंसानी अंगों की भेंट चढ़ाना, यह रिवाज आज भी हमारे देश में कई जगह पाया जाता है। आख़िर क्या यह

दया और रहम दिली के कारनामे हैं?

□ पश्चिम जगत में सूली देना एक आम बात रही है। हज़रत मसीह को सूली देने की कोशिश की गई। सेंट पीटर को उलटा लटका कर सूली दी गई।

□ जान आफ आर्क को ज़िन्दा जलाया गया।

□ प्रोटेस्टेन्ट मत ग्रहण करने वालों के सिर फोड़ कर दिमाग़ को चूर्ण-विचूर्ण किया गया और उन्हें ज़िन्दा जलाया गया।

□ ढोर-डंगर की तरह इंसानों को अफ़रीक़ा से पकड़ कर लाया गया और यूरोप के बाज़ारों में ग़ुलाम बना कर नीलाम किया गया—यह थी पश्चिम की सभ्यता।

□ हिटलर ने गैस चेम्बर में अगणित व्यक्तियों को ख़त्म किया।

□ आज भी भारत के विभिन्न क्षेत्रों से ये खबरें आती हैं। कि फ़साद और दंगों में इन्सानों को ज़िन्दा जलाया गया। वलीपुरम, जमशेदपुर, और भेलसा की घटनाएं इसकी साक्षी हैं।

इस तरह दुनिया के हर देश का इतिहास ज़ुल्म और सितम की दास्तानों से दाग़दार दिखाई देता है। विभिन्न दर्शन शास्त्रों की बुनियाद पर आदमी ने ज़ुल्म व सितम को वैध समझा है। वहीं उसकी ओर से रहम दिली और दानशीलता भी सामने आई है। ज़ालिमाना और हिंसक विचारों को मिटाकर उनकी जगह सही अर्थों में दया की शिक्षा देने वाला अगर कोई सच्चा धर्म है तो वह इस्लाम है।

कुछ धर्मों में ईश्वर के गुणों को विभाजित कर के हर गुण का एक अलग ईश्वर माना जाता है। कुछ धर्म तो ऐसे हैं जिनमें ईश्वर को गुणों से खाली समझा जाता है। लेकिन इस्लाम में ईश्वर सर्वथा दया दिखाई देता है। स्वयं प्यारे नबी हज़रत मुहम्मद के आगमन को दया बतलाया गया है। क़ुरआन में ईश्वर को जगह-जगह दयावान और कृपाशील कहा गया है। अल्लाह को यह पसन्द है कि उस के गुण, दया और कृपा की छाप उस के बन्दों की ज़िन्दगी में भी पायी जाये।

इस्लाम की शिक्षा है कि प्रत्येक कार्य अल्लाह—दयावान, कृपाशील

के नाम से शुरू किया जाय। इस्लाम ने सलाम करने का जो तरीक़ा सिखाया है उससे भी दया और कृपा ही प्रकट होती है। वास्तविक मुसलमान दूसरों के लिए दयावान, कृपाशील और स्नेही होता है। कुरआन की शिक्षा यही है और नबी स० का आदर्श भी यही है। कुछ लोग अगर इस रहम दिली के रास्ते से फिसल जाते हैं तो इस्लाम उन्हें इस राह पर पलट आने की ताकीद करता है।

तुर्की के एक शासक सुलतान सलीम थे। वे अपने अधीनों से बड़ी सख़्ती से पेश आते थे। वे अपने देश की समस्त भाषाओं और सारे धर्मों को मिटाकर एक ही भाषा और एक ही धर्म को प्रचलित करने का इरादा रखते थे लेकिन उस समय के इस्लामी विद्वान के घोर विरोध के कारण सुलतान को अपनी यह योजना समाप्त कर देनी पड़ी।

तफ़रीह के लिए जानवरों या पक्षियों को आपस में लड़ाने का रिवाज विभिन्न देशों में आज भी पाया जाता है। इस्लाम ने इसे अत्यन्त निन्दित ठहराया है।

अदी बिन हातिम ने च्यूंटियों को ख़ुराक पहुंचाई, यह इस्लामी शिक्षा का असर था। सड़क पर चलने का अधिकार जानवरों को भी है, उन्हें हटाया नहीं जा सकता। शीराज़ी ने यह घोषणा की। इस प्रकार की घटनायें मुसलमानों के इतिहास में मिलती हैं।

ऊंट पर अगर तीन व्यक्ति सवार हों और ऊंट बोझ से दबा जाता हो तो सख़्ती के साथ एक को उतार दो। यह शिक्षा भी इस्लाम की है।

यह सही है कि दया की शिक्षा देने वाला इस्लाम-संगीन अपराधों पर अपराधियों को सख़्त सज़ायें देने का आदेश भी देता है। निस्सन्देह इस्लाम ने चोर का हाथ काटने का हुक्म दिया है। लेकिन इसके परिणामों और प्रभाव को भी देखना चाहिए। जिन मुस्लिम देशों में यह क़ानून प्रचलित है, वहां चोरी की घटनायें नहीं के बराबर ही घटित होती हैं।

अरब देशों में क़ातिल की गर्दन तलवार से उड़ा दी जाती है। जब कि अन्य देशों में उसे फांसी दी जाती है या बिजली की कुर्सी पर बिठा कर मौत की सज़ा देते हैं। सूली या बिजली के द्वारा बड़े कष्ट के साथ जान निकलती है। इसलिए तलवार से गर्दन मार कर मौत की सज़ा देने ही को

बेहतर कहा जायेगा ।

क्या मुसलमानों ने मन्दिरों को ढाया?

इसी तरह का एक निराधार आरोप यह है कि मुसलमानों ने भारतीय मंदिरों को ढाया है ।

ऐसे आरोप लगाते समय हम भूल जाते हैं कि इस तरह की हरकतें स्वयं भारत में दूसरे लोगों ने भी की हैं । हमारे यहां समनर पंथ वाले मंदिरों को ढाया गया । हम यह भी भूल गये कि नाटा टीनम की मूर्तियों को लूटा गया और वहां जो सोना था उसे तिरुमगई स्थान के आशावार उठा ले गये ।

हम यह तो कहते हैं कि मुसलमानों ने मन्दिर ढाये, लेकिन हम इसे भूल जाते हैं कि उन्होंने हिन्दू मन्दिरों को ज़मीनें वक़्फ़ कीं । मुसलमानों ने अगर कुछ मन्दिरों को ढाया है तो उसके कारण कुछ और रहे होंगे । इस्लाम की यह शिक्षा नहीं है कि दूसरों के उपासना स्थलों को तबाह या बर्बाद किया जाये ।

एक सज्जन ने जब यह पूछा कि भारत के इतिहास से यह बात मालूम होती है कि मुसलमानों ने मन्दिरों को ढाया और मूर्तियों को तोड़ा है । इसके बारे में आप क्या कहते हैं? इस पर अडियार जी ने कहा कि–

हक़ीकत यह है कि भारत का जो इतिहास लोगों के हाथों में है, वह कोई सच्चा और तहक़ीक़ की रोशनी में तैयार किया हुआ इतिहास नहीं है । मुसलमानों और अन्य धर्मों के लोगों के बीच दुश्मनी पैदा करने के उद्देश्य से पश्चिम के उपद्रवियों ने यह इतिहास लिखा है । अगर यह साबित भी हो जाए कि मुसलमानों ने मन्दिरों को ढाया है और मूर्तियों को तोड़ा है तो मेरा जवाब यह होगा कि इस्लाम में दूसरे धर्मों के मन्दिरों को ढाने या उन्हें तोड़ने की बिल्कुल अनुमति नहीं पायी जाती है । इस काम के करने वाले चाहे महमूद ग़ज़नवी हों या उन की फ़ौज, इसका इस्लाम से कोई ताल्लुक़ नहीं । बल्कि इस्लामी राज्य तो ग़ैर-मुस्लिमों के पूजा स्थलों की रक्षा करने का ज़िम्मेदार है ।

बुतों को पूजना ग़लत है । लोगों में यह चेतना इस्लाम पैदा करता है

और इसके लिए वह स्पष्ट प्रमाण प्रस्तुत करता है। धर्म के सम्बन्ध में कोई ज़ोर-ज़बर्दस्ती नहीं, यह घोषणा इस्लाम ने स्पष्ट शब्दों में की है। वह चाहता है कि लोगों के दिलों की दुनिया शिर्क और कुफ़्र से पाक हो और उसमें सत्य का प्रकाश फैल जाय। इसके लिए वह प्रचार और आमंत्रण का तरीक़ा अपनाता है। ज़ोर-ज़बर्दस्ती की नीति उसकी अपनी प्रकृति के बिल्कुल प्रतिकूल है।

प्यारे नबी स० ने काबा को बुतों से पाक किया है। यह एक ऐतिहासिक सत्य है। लेकिन यहां यह बात न भूलना चाहिए कि काबा की हैसियत अल्लाह के घर की है। उसे बुतख़ाना तो लोगों ने अपनी अज्ञानता और उद्दंडता से बना रखा था (काबा सिर्फ़ अल्लाह की इबादत के लिए ही बनाया गया था। इस बात को अरब के बुतपूजंक भी मानते थे। बाद के ज़माने में अल्लाह के इस घर में बहुत से बुत लाकर रख दिये गयें, जो बिल्कुल ग़लत था। उन्हीं बुतों को नबी स० ने काबा से हटाया और उसे पहले की तरह ख़ालिस अल्लाह की इबादत का घर बना दिया)

नबी स० ने ईसाइयों और यहूदियों की इबादतगाहों को ढाया हो, इसका कोई उदाहरण नहीं पेश किया जा सकता।

इस्लाम का प्रचार और तलवार

एक सवाल यह किया गया है कि इस्लाम तलवार के ज़ोर से फैला है। अपनी निजी खूबियों की वजह से वह दुनिया में नहीं फैला।

यह केवल एक दावा है जिसके पीछे कोई दलील नहीं पाई जाती। कुरआन ने तो साफ़ शब्दों में ज़ोर-ज़बर्दस्ती से काम लेने से रोका है।

इस्लाम पर आपत्ति करने वाले दुनिया के इतिहास को भूल जाते हैं। उन की ज़ुबान खुलती है तो इस्लाम के विरुद्ध और निराधार आरोप घड़ने का कर्त्तव्य निभाया जाने लगता है। दुनिया के इतिहास पर नज़र डालिए तो मालूम होगा कि बहुत-सी हुकूमतों ने अपने मत और धर्म को ताकत के बलबूते पर फैलाया है। दूर क्यों जाइए। भारत ही के इतिहास को लीजिए। यहां बुद्धमत अशोक और हर्ष की हुकूमत की मदद से फैला।

समनरपंथ का भी यही इतिहास है । एक समय वह था जब कि भारत के सारे ही राजा-महाराजा समनर पंथी थे और भारत पर यही मत और पंथ छाया हुआ था । इसके बाद वैदिक धर्म (हिन्दू मत) का ज़माना आया । इस धर्म ने हुकूमत की शक्ति से दूसरे धर्म वालों को ख़त्म किया और इस सिलसिलें में लोगों को सूली तक पर चढ़ाया गया । यह है वह तरीक़ा जिसे अपना कर भारत को एक हिन्दूराष्ट्र बनाने की कोशिश की गयी ।

फिर भारतीय शासकों ने फ़ौजकशी कर के दूसरे देशों में भी अपने धर्म को फैलाया । जावा, सुमात्रा, कम्बोडिया में आज भी हिन्दू धर्म के चिन्ह और मूर्तियां पाई जाती हैं । ईसाई धर्म के मानने वाले शासकों ने जब अन्य देशों पर फौजकशी की तो वहां उन्होंने ईसाईयत को भी फैलाने की कोशिश की ।

अब अगर यह साबित भी हो कि कुछ मुस्लिम शासकों ने इस्लाम के प्रचार में अपने प्रभाव को भी इस्तेमाल किया तो यह कोई निराली ग़लती नहीं है, जिससे इस्लाम को बदनाम करने की कोशिश की जाय । आज के इल्मी दौर में भी बार-बार यह आरोप लगाया जाता है कि इस्लाम अपनी शक्ति से नहीं बल्कि तलवार की शक्ति से फैला है । आश्चर्य तो इस बात पर है कि यह आरोप लगाने वालों में ऐसे सत्ताधारी लोग भी नज़र आते हैं जिनका अपना हाल यह है कि वे बन्दूक़ की नाल पर अपने सिद्धान्त और मत को फैलाने का घृणित प्रयास करते हैं । लेकिन उनकी निगाह अपनी तरफ़ नहीं जाती ।

आज के युग में धर्म के सम्बन्ध में ज़ोर-ज़बर्दस्ती का सवाल ही नहीं पैदा होता । हां, अपने विचारों पर क़ायम रहने और उन को दूसरों तक पहुंचाने का अधिकार हर एक को प्राप्त है । आज के युग में भी इस्लाम स्वीकार करने वालों की संख्या कुछ कम नहीं है । आख़िर उन्हें किस तलवार के द्वारा मजबूर किया गया है? वह कोई लोहे की तलवार नहीं है बल्कि वह सच्चाई की कशिश है जो लोगों को अपनी ओर खींच कर रहती है ।